नैहरा रों ओलती आरो ऐंगन

नैहरा रों ओलती आरो ऐंगन

जीवनलता पूर्वे

अंगिका संसद
सराय, भागलपुर

तृतीय संस्करण
२०२३

द्वितीय संस्करण
२००२

प्रथम संस्करण
६१६७

सर्वाधिकार ©
लेखकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
एक सौ रूपये मात्र

Naihara ro Aulti Aaro Aengan (Biopic)
Jivanlata Purbey Rs.100/-

पिताजी हरेकृष्ण प्रसाद
आरो माता देवकी देवी
रों पुण्य स्मृति में।

—जीवनलता

हमरों बात

ई आत्मकथा लिखै के प्रेरणा केना कें मिललै, एकरों एक कहानी है। जबें 'तुलसी के काव्य में राम रों रूप आरो स्वरूप' लिखी रहलों छेलियै, तखनिये मनों में ई विचार उठलै कि जों आय हमरों माय-बाबू होतियै तें ई सब देखी कें कत्तें खुश होतियै। ई भाव मनों में उठना छेलै कि तखनिये हम्में यहू निर्णय लेलियै कि माय-बाबू के स्मृति में भी एक किताब लिखवै, कि केना कें हमरों सिनी के जीवन बीतै छेलै? हुनका सिनी के पारिवारिक स्थति की छेलै आरो हुनका सिनी के स्नेह छाया में हमरों जीवन केना कें बीतलों छेलै।

एक निवेदन कि है किताब आत्मकथा तें जरूर छेकै, मतरकि ई सिर्फ आत्मकथा ही नै छेकै, वरन ई एक हेनों किताब भी लिखतें-लिखतें बनी गेलों छै, जेकरा में हमरों आयकों

समाज के भी चित्र उभरलों छै। यै वास्तें जों ई किताब के आत्मकथा वाला स्वरूप कुछ ढीला पड़लों रहें, तभियो हमरा ई किताब के स्वरूप-रूप पर गौरव छै --

निज कवित्त केहि लाग न निका

'नैहरा रों ओलती आरो ऐंगन' किताब के शीर्षक डॉ. अमरेन्द्र सें मिललै, यै वास्तें हम्में हुनकों आभारी छी।

—जीवनलता

नैहरा के ओलती आरो ऐंगन

आदमी लाख आगू बढ़तें जाय, ऊ उल्टी कें पीछू ताकबे करै छै। एकरों बिना ओकरों जीवन आगू बढ़ौ नै पारें। है एक प्राकृतिक नियम भी छेकै कि आदमी कें जत्तें आगू छलांग मारै लें पड़ै छै, ओकरा ओत्ते पीछू लौटै लें पड़ै छै। लौटना जरूरी होय जाय छै। अतीत के स्मरण आदमी के जीवन में करुणा के जन्म दै छै, सुख के भी जन्म दै छै आरो यही सुख-दुख के याद करी कें आदमी आपनों वर्तमान कें आरो सुखमय बनाय के चेष्टा करै छै।

बीतलों दिनों के स्मरण जहाँ आदमी कें आपनों पूर्वज के महानता सें जोड़ै छै, वाँही जो कोय गलती पूर्वज सें होय गेलों रहें, तें ओकरा सें सबक लै कें आगू के जिन्दगी सुधारै में भी मदद मिलै छै। संस्मरण आपनों पुरखों के याद छेकै, जेकरों द्वारा आदमी आपनों पुरखों कें आपना सामना में पावै छै आरो जेकरों शीतल छांव में आदमी आपनों नया-नया भविष्य लें चिन्ता करै छै, महान होय के संकल्प लै छै, आपनों पुरखे नाँखी।

हमरों जीवन के आय तक कत्तें वसन्त-पतझड़ बीती चुकलों छै, ई बीचों में नै जानौं केत्तें समुद्र आपनों ऊँचाई बढ़ाय लेलें छै आरो यहू नै जानौं कि गंगा के पानी घटी कें केत्तें कम रही गेलों छै। बहुत कुछ में बहुत परिवर्तन आवी गेलों छै, जे कल तांय तक छेलै, आय ओकरों कहीं नामो-निशान नै छै, खोजलौ पर नै दिखें पारें। खोदला पर शायदे मिलें पारें। मतरकि हमरों याद, आपनों पूर्वज के याद एक थाती जकां

अभियो तक हमरों दिमागों में संचित छै, सुरक्षित छै, जेकरा नै तें हमरों उमिर के उतार-चढ़ाव खतम करें पारलकै, आरो नै तें समय के तेज दौड़-धूप नें। अतीत के याद सच्चे में कत्तें सुख-दुख सें भरलों मिट्टों गाँव होय छै। महाकवि सुमन सूरो नें यहें अतीत के सुखद स्मृति के बारे में लिखनें छथिन --

यादों के बरियाती विरहा के गाँव छै,
घाट-बाट छिरयैलों पियवा के नाँव छै।
कोयल के कूक बनी हूक जिया सालै छै
बिसरैलों गीत-नाद बट-बट कें ख्यालै छै
बाबा के अमराई, पनघट के पुरवाई
पोर-पोर उगलों ऊ रूप ठाँव-ठाँव छै!
चानों के छाँही में फूल-कली ठुनकै छै
कोबा के रस ढारी मनसै छै, मुस्कै छै
टहकै छै डंक एक भमरा के भन-भन में
बेसुरता तोड़ै लें कागा के काँव छै!
डारडार मौलै छै, पात-पात सिहरै छै
अनटेटलों टीस एक ठौर-ठौर पसरै छै
डोलै छै लहर-लहर धारों-मँजधारों में
बिन माँझी उपचैलों जिनगी के नाव छै!

कहै छै समय जबें चलै छै तें आपनों गोड़ों के गति सें सबकें रौंदतें चलै छै। कोइयो सुरक्षित नै बचै छै, यहाँ तक कि सभ्यता, संस्कृति, इतिहास सब रौंदलों चललों जाय छै। बस बची जाय छै एकटा याद, केकरो स्मृति। आदमी के सम्पत भी छुटी जाय छै। एक सम्पत, जे बचै छै ऊ छेकै स्मृति के सम्पत, जेकर्है लेलें आदमी जीवन के अन्तिम काल तक चलतें रहै छै—कभी रोतें, कभी हँसतें, जेकरा आदमी कभी छोड़ें नै पारें, स्मृति होने आदमी साथ जुड़लो रहै छै, जेना चिल्कोरों साथैं ओकरों चिल्का।

हम्में याद करै छियै आपनों बाबू कें, अपनी माय के तें, दोनों सीढ़ी बनी जाय छै ऊ जगह पहुँचाय दै के सीढ़ी, जहाँ यादे याद होय छै। जेना याद के साम्राज्य । हमरा ख्याल आबें लागै छै, आपनों पिताजी

आरो पिताजी के गोतिया-लैया, सगा सम्बन्धी आरो बंधु-बाँधव सब। हमरों बाबूजी के दू भाय छेलै। आपना में काफी मेल-मुहब्बत राखै वाला छेलै आरो दू भाय के बाद एक बहिन बहिन। बहिन के सही नाम की छेलै, ई बताना मुश्किल, मतरकि हमरों बाबूजी के नाम हरेकृष्ण प्रसाद साह छेलै आरो हिनकों बड़ों भाय के नाम हरिहर बाबू। हरिहर बाबू के एक्के संतान रहै—सच्चिदानन्द प्रसाद, मतरकि हमरों बाबूजी कें जीत्तों संतान के जोग नै बनै। सन्तान तें हुवै, मतरकि कोय जनमथैं आरो कोय धरती पर कुछ दिन साँस लेला के बाद चली बसै। हमरों भाय परमानन्द साह के मृत्यु तें होइये चुकलों छेलै, ओकरों पहिलें एक भाय के आरो नुकसान होय चुकलों रहै। जबें तेसरों भाय कैलाश प्रसाद के जन्म भेलै, तें हमरों बाबू के चिंतित होय जैवों स्वभाविक रहै।

जबें बाबू के एक-एक सन्तान के नुकसान हुवें लागलों छेलै आरो हमरों तेसरों भाय जबें जनम लेलकै, तबें हमरों बाबू कें कोय अज्ञात भय सें कांपी उठवों एकदम स्वाभाविक छेलै, कैन्हें कि यहू तेसरों संतान के जनम के बाद सें चौथी बेटी भी बीमार रहें लागली छेलै।

हमरों बाबू नें एक बहुत बड़ों ज्योतिष सें सम्पर्क करलकै। पता नै, आजकल ई बात कें लै कें लोगें उपहासे करें पारें कि केन्हों परिवार रहै कि ज्योतिष, जन्तर-मन्तर पर विश्वास करै छेलै, पर आयकों आदमी कें विश्वास हुवें कि नै हुवें, आरो आयकों ज्योतिष गणना सही निकलें कि नै निकलें, तखनी प्रायः आदमी के ज्योतिष आरो तंत्र-मंत्र पर विश्वास छेलै, कैन्हेंकि तखनी ज्योतिष आरो तंत्र-मंत्र गलत नै होय छेलै। ई विद्या ऊ सब आदमी के साधना होय छेलै, जे जीवन में लाभ-लोभ के बात नै सोचै छेलै, एकरा कमाय के धन्धा नै बनैलें छेलै। ज्योतिष-गणना आरो तंत्र-मंत्र के साधना सिर्फ आदमी के उपकार लेली छेलै। तबें हेनों विद्या गलत केना होतियै? आय तें ज्योतिष विद्या आरो तंत्र-मंत्र कमाय के साधन छेकै, धन कमाय के साधन छेकै, यै लेली ज्योतिष विद्या भी ठगी के विद्या बनी कें रही गेलों छै।

ज्योतिष नें बतैलें छेलै कि हमरों बाबू नें पूर्व जनम में कोय वेश्या के हमल गिरवैनें रहै, यही लेली यै जनम में हुनका पूर्व जनम के पाप के परिणाम भोगै लें पड़ी रैल्हों छै। ई पाप के परिष्कार लेली

ज्योतिष नें ई बतैनें रहै कि हमरों बाबू कें होम-हाम करै लें लागतै। ज्योतिष नें काट-क्षेप के रास्ता बतैतें हुवें कहलें छेलै कि पूर्व जनम के कुछाया सें मुक्ति लेली भगवती के पूजा जरूरी छै, आरो नवरात्र के कलश स्थापना होना आरो बहुत जरूरी। भगवती के कृपा ही आबें परिवार के वंश वृद्धि करें पारें, हुनिये दुख हरें पारें। सच्चे में भगवती माय के सिवा आरो के दुख हरण करें पारें। हेनों माय तें आदमिये के समस्त देवों के दुख हरैवाली छेकी। तभिये तें भगवती माय के उपासक कवि डोमन साहु 'समीर' नें हुनकों प्रार्थना में ई लिखनें छै --

अगम अलख अम्ब! अविकार अविचल
अमिट, अव्यय शुभ्र, देवी सिंहवाहिनी।
अनादि अनन्त अम्ब! अगोचर अतिशय,
महिमा अपार नित्य देवी सिंहवाहिनी।
आदि-रूपा सब काल शक्ति-रूपा दिव्य भाल,
वाहन बलिष्ठ सिंह देवी सिंहवाहिनी।
मुग्दर सारंग शंख हाथ सोहे अम्ब,
अकथ अमन्द रूप देवी सिंहवाहिनी।
अतीव पवित्र सम सब रूप-गुण-धाम,
करूणा अगाध तोरों देवी सिंहवाहिनी।
जब-जब भक्त जन धरल धेयान तबें।
तुरन्त द्रवित भेलि देवी सिंहवाहिनी।
भेलै जब-जब देवी दृष्टि के अभाव तबें
करूणा प्रगट तोरों देवी सिंहवाहिनी।
दुःख-ताप रोग-शोक तापत अनेक लोग,
गहत चरण तोरों देवी सिंहवाहिनी।
भगत अनेक नित विविध कामना चित्त,
पूजत चरण तोरों देवी सिंहवाहिनी।
करै छों पवित्र मन आपनों भगत जन,
हरै छों पातक घोरों देवी सिंहवाहिनी।
निपुत्र कें पुत्र दै छों कुमति कें सुमतियों,
निर्धन कें धन दै छों देवी सिंहवाहिनी।

कपट प्रपंच छल विकार दूषित जल,
भरल अन्तर मोरों देवी सिंहवाहिनी।
मलिन चंचल मन लोचन पतित मम,
फूटल करम मोरों देवी सिंहवाहिनी।

हमरों बाबू नें आपनों मनों में ई धारणा कें निश्चित करी कि आबें भगवती माय छोड़ी कें कोइयो परमात्मा हुनकों दुःख नै हरें पारें, से हुनी घरों में भगवती जाप के अनुष्ठान शुरू करवैलकै, आरो वही सालों सें नवरात्र के समय कलश स्थापना के नींव रखलों गेलै, जे आय तक चली रहलों छै।

है नियम-परम्परा जोगै के जे उत्साह हमरों पुरानों पीढ़ी में मिलै छै, आय आबें ऊ कहां। जों है नै मिलै छै तें ओकरों एक्के कारण छेकै कि आयकों लोगों में आस्था-विश्वास के कमी होय गेलों छै। कमी की होय गेलै, है कहों कि खतमे होय गेलों छै। यै वास्तें आदमी के जिनगी में स्थिरतो नै छै। जे काम आय शुरू करै छै, विश्वास आस्था के कमी के कारण दूसरे दिन ओकरा छोड़िये दै छै। तखिनकों समय में है बात नै छेलै। बाबूजी नें जे कलश स्थापना के पवित्र अनुष्ठान शुरू करलकै, ऊ हमरों घरों में आय तक चलतें आबी रहलों छै। आबें कलकों लोगें की करतै, है तें बताना मुशकिल।

होम-हाम के कार्य बड़ी धूमधाम के साथ कै दिन तक करलों गेलों छेलै आरो घर-परिवार सें कुकाल के, खराब नक्षत्र के दोष धीरें-धीरें आलोपित हुवें लागलों छेलै। ज्योतिष नें बतैनें छेलै कि हमरों तेसरों भाय भातृहन्ता ही नै, भगिनीहन्ता भी छेकै, ई नै आगू के राखतै, नै पीछू के। ज्योतिष के बात झूठ नै छेलै, सच्चे में हमरों दूसरों भाय तें चारे बरसों के बाद खतम होय गेलों छेलै, आरो हमरा सें पहलकी बहिन मांडवी भी बीमारे रहै छेलै। आरो एक दिन बीमारिये नें हमरी बहिन कें बाबू सें अलग करी देलकै। ज्योतिष के भविष्यवाणी सहिये निकली गेलै आरो घरों में कुहराम मची गेलै।

घरों में जबें पाँचमों सन्तान के रूपों में हम्में आपनों माय के गोदी में ऐलियै, तबें जत्ते माय-बाबू कें खुशी होलों होतै, ओकरा सें कम चिन्तौ नैं, मतरकि भगवती माय के कृपा सें रसें-रसें परिवार पर सें खराब

नक्षत्र के कुदृष्टि तें हटै लागलों छेलै, मजकि यहू नै छेलै कि एकबारगिये सब कुछ हठाते बदलें लागले छेलै।

हमरों पर कोय अज्ञात छाया जन्मे के साथ लागी गेलों छेलै। जन्म के कुच्छुवे समय के बाद हमरों लीवर खराब होय गेलों छेलै। दू-दू बार टाइफाइड नें दबोची लेलकै। हम्में तें जेना एकदम मरनासन्न होय गेलों छलां। माय-बाबू नें है सोची लेलकै कि हमरों प्राण नै बचें पारें। एकबार हुनकों सिनी के विश्वास जरूरे डिगी गेलों होतै, नेम-धरम के आस्था पर सें, आरो यही कारण छेलै कि हमरों जन्म के बाद हमरों छट्टी नै मनैलों गेलों छेलै। माय नें कहलें छेलै कि जों हम्में बचवै-उचवै तें हमरों छट्टी हमरों बीहे वक्ती मनैलों जैतै आरो सचमुचे में हमरों छट्टी बीहे वक्ती मनैलों गेलों छेलै। जन्म के बाद जे हमरों छट्टी मनैलों गेलों छेलै, ऊ तें खाली राय-गोटों लै कें नेमभर करी देलों गेलों छेलै। नैं कोय उमंग, नै कोय उत्साह।

आदमी कें आपनों जीवन में कुकर्म तें कभियो नै करना चाहियों जबकि आदमी करै छै। होकरों हवस ओकरा सें पाप करवावै छै आरो आदमी आपनों हवस के कारणे कुकर्म करतें चल्लों जाय छै, जेकरे कारण आदमी एक जन्म सें दूसरों जनम तक पाप भोगतें रहै छै।

आय आदमी कें जन्म के बाद जन्म पर विश्वास छै कि नैं, नैं कहें पारौं। मतरकि हमरों ऋषि-मुनी है मानै छेलै कि आदमी जे एक जनम में करै छै, ओकरे स्वाद वें दूसरों जनम में चाखै छै। है नैं छेकै कि ई जन्मों के कुकर्म-सुकर्म यहें जन्मों में खतम होय जाय छै। हमरों महान ऋषि शंकराचार्य नें कहलें छथिन कि कुम्हारें आपनों लाठी सें जबें चक्का घुमाय छै तें लाठी उठैला के बाद चक्का कुछ देर तांय घूमतें रहै छै। होन्है कें ई जनम के बादो, यै जन्मों के करम वासना आदमी के अगला जनम तक पीछुवैतें रहै छै आरो होकरों भोग भोगै लें पड़ै है। यही लें हम्में कहै छियै कि आदमी कें कुकर्म नैं करना चाहियों।

हमरों पिताजी जरूरे करनें होतै जेकरों भोग ही हुनका साथें हमरो भोगै लें पड़लै, बीमारी सें तें पीड़ित रहवे करलियै। कै बार गिरी-गिरी मरै सें बचें सकलौ।

एक बार के घटना तें हमरा आभियो दहलाय दै छै। छतों पर

कपड़ा सुखै लें देना छेलै। छत्तों पर एक पाइप छेलै, ओकरै पर कपड़ा सुखैलों जाय। छत छेलै नड़िया। भूल सें हमरों गोड़ एकदम किनारी तक पहुँची गेलै आरो पाइप हमरों हाथों में आबी गेलै। हम्में ई सोचें लागलियै कि जो पाइप गिरी जैतै, तें आवाज भेतै आरो हमरा मार पड़तों। ई सें हम्में पाइप नैं छोड़लियै। पाइप धीरें-धीरें छत सें नीचें ऐंगना दिस ससरें लागलों छेलै आरू हम्मू वहें पाइपों के साथ ऐंगना में भदाम सना गिरी पड़लियै। गिरथैं हमरों होश उड़ी गेलों छेलै। ई बात माय-बाबू नें हमरा होश ऐला के बाद बतैनें छेलै कि केन्हों मुश्किल में हमरों प्राण लौटें पारलें छेलै। हम्में आय ऊ घटना कें याद करी डरियो जाय छियै। सोच्हौ लागै छियै कि तैहाकरों आरो आयकों जमाना में कत्तें अन्तर आवी गेलों छै। तहाकरों लोगों में आपनों बड़ों गुरूजन लेली कत्तें डोंर आरो आदर के भाव छेलै, मजकि आय जेना ई सब अवगुण मानलों जाय छै। ई कहलों जाय छै कि बच्चा कें डर-भय दिखैला सें ओकरों मानसिक विकास नै होय छै। ओकरों बुद्धि कुंठित होय जाय है। ओकरों सब तरह के बाढ़ रूकी जाय छै। जों है बात सही होतियै कि हमरों पूर्वज सिनी, जे गुरूजन के भय-डोंर कें मानै छेलात, एक्को बड़ों आदमी नैं बनें पारतियात।

डर-भय अनुशासन कें जन्म दै छै। आय समाज में जे अनुशासनहीनता छै, ओकरों एक्के प्रमुख कारण छेकै कि आदमी कें डोंर-भय कुछ नै रही गेलों छै। बड़ों-छोटों के ज्ञान कुछ नै।

यही लेली बड़ों-छोटों सभै सबके अनादर करी रेल्हों छै। घोंर-द्वार सें लैकें देश के राजनेता सिनी के जे हाल छै, ऊ हेने कें छै। तखनी समय में हेनों बात नैं छेलै। विश्वामित्र के सामना में राम-लक्ष्मण नतमस्तक छेलै तें विश्वामित्र आपनों सम्पूर्ण ज्ञान चारो भाय सिनी कें देलें छथिन। आय तें चटियै सिनी गुरू होय गेलों छै। कांही गुरू मार खाय छै भला? आय डोंर-भय के अभाव के कारणें ई हालत छै कि नैं अपराधी कें पुलिस-कानून के डोंर छै, नैं अनीति सें परहेज, नैं नीति के डोंर।

हम्मी नैं, घरों में जे भी छेलै, ऊ सब बड़ों सें बड़ी डरै छेलै।

हमरों बाबू जत्तें हमरा मानै रहै, ओकरा सें कहीं ज्यादा माय मानै छेलै। माय के हृदय तें आकाश आरो समुद्र नांखी अनन्त होय छै,

केन्हों कें थाह-पता नैं लगैलों जावें सकै। आपनों सन्तान के प्रति माय के हृदय में जे ममत्व, जे वात्सल्य होय छै, ऊ पिता के हृदय में केन्हों कें नैं हुवें पारें। एकरों एक कारण तें साफ है कि औरत हृदय सें ही अधिक कोमल आरो मुलायम मृदु होय छें आरो पुरूष तें स्वभाव सें ही उपेक्षाकृत कठोर। हमरी माय जत्तें देखै में सुन्दर रहै, होन्हें मन सें भी सुन्दर आकर्षक। माय के नाम छेलै देवकी देवी। हिन्ही ढंग के साड़ी पहनें छेलै। जबें शुरू में गरीबी के दिन छेलै, तबें तें सादगी के साथ माय रहें छेलै, लेकिन जबें नैहरा के दिन फिरलै आरो धन-सम्पत के आना होलै, तें माय के देहों पर सूती सें लैकें रेशमी साड़ी तक शोभै छेलै। रेशमी साड़ी रहें, आकि सूती, सब साड़ी में माय के रूप सोना रं निखरै। सोना रं रूपो भी छेलै माय के। यही कारण माय कें कभी बनाव-शृंगार करै के जरूरते नै छेलै। बस कपारों पर एक बिन्दी के टिकुली आरो सीती में सिन्दूर के लाल झकझक रेखा—यहें माय के शृंगार छेलै। हमरों माय के नैहर आरो हमरों नैहर में बहुते दूरी नै छेलै, बस सौ-दू सौ कदम के दूरी। माय के नैहर मुन्दीचक में छेलै आरो बाबूजी तखनी खलीफाबाग में, जेकरा आयकल गुरुद्वारा रोड कहै छै, दरभंगा महाराज के मकान रहै छेलै। मकान की छेलै बस कचहरिये कहों। बड़का ऐंगन के कोठरी, पक्का के मकान आरो खुल्ला दलान। हमरों जनम यही मकानों में होलों छेलै। आपनों मकान तें बाद में बाबूजी नें बनैलकै हमरों जनम के कुछ साल बाद।

हमरों जनम तक बाबूजी के आर्थिक स्थिति अच्छा नै छेलै। हुनकों आर्थिक स्थिति तें हमरों जनमला के बादे सुधरना शुरू होलै। आरो सुधरलै तें सुधरते चललों गेलै।

दरभंगा नरेश नें जखनी है मकान बेचैलें चाहलकें, तें सबसें पहिले हुनी हमरे बाबूजी से कहलकात कि तोहें है मकान किनी ला। बहुत सस्ते में हुनी मकान हमरों बाबूजी कें दै रहलों छलथिन, मतरकि बाबूजी के पास तखनी ओतना रुपैया नै रहै कि हुनी मकान किनें सकें। ओत्तें बड़ों मकान के दाम दरभंगा नरेश नें खाली पाँचे हजार लगैनें छेलात।

तबें तखिनकों बात छेलै। पाँचों टका के मोल रहें। आय तें पाँच हजार जेना पाँच टका। हिन्हें ऐलौं, हुन्नें फुस। पाँच लाख रूपैया

आय लोगें लगैतें तें एक अच्छा मकान बनैतै आरो तखनी पाँच हजार में बाबूजी कें है मकान मिली रहलों छेलै।

केकरौ देतियै तें नै, मतरकि बाबूजी कें दै रहलों छलथिन, यै लेली कि बाबूजी दरभंगा नरेश के मुकदमा लड़ै छेलै। हमरों बाबूजी आपनों समय के बहुत नामी वकील छेलै। ई ऊ समय के बात छेकै जबें हमरों जनम होय चुकलों छेलै। जबें बाबूजी है मकान कें नै लियें पारलकै तें दरभंगा नरेश नें बाबूजी सें कहलकात—हमरों बहुत केस तोहें लड़लों छों, हम्में चाहै छी कि ओकरों बदला तोरा कुछ दियौं, तें बाबूजी नें कुछ जमीन के मांग करलकै।

यै बातों पर दरभंगा नरेश नें मधेपुरा के एक बहुत बड़ों काश-वन बाबूजी के नाम करी देलें रहथिन। जबें बाबूजी वहाँ पहुँचलों छेलै आरो हुनी ऊ जमीन कें देखलें छेलै, तें मीलोमील कासेवन दिखाई पड़ी रहलों छेलै। जबें काश-वन कें कटवैलों गेलों छलै, आरो ओकरों नापी करबैलों गेलों छेलै, तबें वैसें बाबूजी कें जे जमीन हासिल होलों छेलै, ऊ जमीन छेलै, सवा सौ बीघा के जमीन। बाबूजी के जेना किस्मते खुली गेलों छेलै। पर यहू बात सही छेलै कि वै जमीन पर खेती करै के बात कोय्यो कभियो नै सोचें सकै छेलै। मजकि बाबूजी के हौसला ऊ काश-वन आरो दलदली जमीन देखी कें कभियो नैं दहललै आरो हुनी वै जमीनों पर खेती करवाना शुरू करलकै। आरो तबें घरों पर लक्ष्मी के हंकारों शुरू हुवें लागलै।

कभी-कभी हम्में सोचै छियै कि आय जे मनुष्य कें आर्थिक परेशानी उठाय लें पड़ै छै, ओकरों एक्के कारण छेकै कि आय आदमी में कर्म करै के प्रवृत्ति रों अभाव होय गेलों छै। नै शरीर सें कुछ काम करै लें चाहै छै, नै यै दिश आपनों दिमाग लगाय लें चाहै छै। बस चाहै छै कि बैठले-बैठले ओकरों पास कुबेर के भण्डार आवी जाय आरो दुनिया भरी के सुविधा ओकरों घरों में जुटी जाय। मजकि है उद्यम के बिना केना हुवें पारें।

ई होवै के दूसरों रास्ता तें यही बची जाय छै, कि दूसरा कें ठग, चोरी, डकैती, हत्या करौ आरो दूसरा के सम्पत हड़पी कें आपनों घोंर भरी लौं। आरो आय दुनिया में होय की रैल्हों छै? यही तें होय रैल्हों छै।

आबें कर्म के महत्व घटी गेलै। कर्म, जे ई लोक आरो परलोक के सुधारै छै। यही सें तें गीता में श्रीकृष्ण नें कर्म करै के ही उपदेश देलकै। ई कहलकै कि जीव के हाथों में सिर्फ कर्म करै के ही अधिकार छै, परिणाम के चिंता ओकरा नै करना छै। परिणाम तें हमेशे भगवान सोचै छै। महात्मा बुद्ध नें भी श्रीकृष्ण नाँखी कर्मवाद पर ही आपनों उपदेश विशेष टिकैनें छेलै। भगवान बुद्ध के भी यह कहना छेलै कि आदमी कें सिर्फ आपनों कर्म करना चाहियों। हुनी तें ईश्वर सें भी ज्यादा महत्व कर्म कें ही देतें रहलै। हुनकों कहना छेलै कि आपनों कर्म के पूर्णता देवों ही मनुष्य के सबसें बड़ों कर्तव्य छेकै। जों कोय व्यक्ति कें तीर लागी जाय आरो कोय दूसरों व्यक्ति वहाँ पर बैठी कें यहें सोचै कि है तीर कहाँ सें ऐलों छै? कौनें बनैलकै? कौनें चलैलकै? तें ऐत्तें देरी में तीर के शिकार मरिये जैतै। आदमी कें तें चाहियों कि है सब बातों कें छोड़ी, जल्दी सें तीर निकालें। होने कें आदमी कें ई सब बातों के की संसार केना बनलै, के बनैलकै, के चक्कर में नै पड़ी खाली आपनों कर्म करतें रहना चाहियों।

हमरों बाबूजी में कर्म करतें रहै के अजगुत लगन छेलै। है कर्मवाद के प्रेरणा हुनका धार्मिक पुस्तक के अध्ययन सें ही मिललों छेलै। हमरा याद छै कि हुनी कोय-न-कोय धार्मिक पुस्तक निकाली लै आरो हमरा सुनैतें रहें, ई समझतें हुवें कि आदमी के भाग्य ओकरों कर्मे निर्धारित करै छै। आदमी आपनों कर्म ही भोग भोगतें मरै, जन्मै छै। मनुष्य के पूर्व, वर्तमान आरो पुर्नजन्म—तीनो ओकरों कर्म सें बँधलों छै। ई कर्म छेकै—प्रारब्ध, संचित आरो क्रियमान। हमरों सबमें पूर्व कर्म संचित होय छै, वैमें सें जतना-टा भाग कर्म देवता हमरा सें भुगतवाय लें चाहै छै, वही प्रारब्ध बनी गेलों छै। हमरा ऊ सबकें जरूरे भोगै लें पड़ै छै। क्रियमान ऊ छेकै जेकरा हम्में अभी करी रैल्हों छियै।

तें हम्में जे कुछ अभी करी रैल्हो छियै, ओकरों भोग केना नैं भोगै लें पड़तै। सब कर्म के फेर में यहाँ घूमी रैल्हों छै। मनुष्य सें लैकें देवतौ ताँय। नै तें भगवान के अवतार राम कें वनवास केना मिलतियै।

बाबूजी कें कर्म साथैं भाग्य पर भी बड़ा विश्वास छेलै, मतरकि भाग्य सें कहीं ज्यादा विश्वास छेलै आपनों कर्मों पर। जबें मधेपुरा के ही सवा सौ बीघा पर हुनी खेती शुरू करलकै, तें हमरों घर के दुख-दलिद्दर

उखड़ी कें भागें लागलै। पहलें तें ऊ जमीनों पर शकरकन्द के ही खेती शुरू करलों गेलों छेलै आरो दू-तीन फसल शकरकंद आरो आलू के वै जमीनों सें लेलों गेलै। लेकिन जल्दिये ऊ जमीन कें धनखेती में भी बदली देलों गेलै। तबें की छेलै—नैं खाली धाने, मतरकि दलहन, तेलहन के भी फसल ऊ खेतों में आबें लागलै। आबें लागलै तें हेनों कि घोंर धन-धान्य के भण्डार बनें लागलै। बाबूजी नें वही सवा सौ बीघा के जमीन सें जमीन के विस्तार करना शुरू करी देनें छेलै। भागलपुर में जगदीशपुर के नगीच जमीन खरीदलकै आरो घोघा के नगीच ढेर सिनी जमीन। बाबू कें जमीन खरीदै के एक तरह सें शौक बनी गेलै। आरो हुनी आपनों समय में बहुत जमीन बनैलकै। बचपन में हम्में धान अथवा दलहन, तेलहन के फसल वत्ती ऊ जमीनों पर जरूरे जाय छेलियै। कत्तें सुहानों दृश्य लागै छेलै, कत्तें सुहानों मौसम। ऊ पकलों-पकलों धान आरो फेनू चैता के हरहरैतें फसल—आभियो आँखी में झुमतें रहै छै। सोचै छियै, काश हौ हमरों दिन कहियो नै जैतियै। बाबूजी नै गुजरतियै। हौ सब जमीन नै बिकतियै, तें आइयो हौ सब दृश्य जरूर देखै लें मिलतियै। मतरकि आय तें बस आँखी में हौ सब एक दृश्य नाँखी बची गेलों छै। बस आँखी में दूर-दूर तक के हौ लहरैतें हरियाली लहरैतें रहै छै। याद आवें लागै छै—धनखेती में चिड़िया के फुर्र-फुर्र उड़बों, अगहन के हौ ठण्डा में रात-रात भर बोरसी तापी कें धान जोगबों, वही धनखेती में लरुआ के गद्दी पर मुड़की बनाय कें सोबों, बनिहारिन सिनी के गीत गैवों, फेनू कचिया के कचर-कचर के आवाज, आरो वही धनखेतों में लोरहा पकैवों, माथा पर धान के बोझों लै कें गाँव के दुलहिन के खमार दिश जैतें देखवों, सबकुछ याद आवें लागै छै। आरो हेकरे साथ याद आबी जाय छै, अंगिका के द्विवेदी सच्चिदानन्द 'श्रीस्नेही' के ई गीत,

उग सूरज खिली उठे कियारी गल्ली-गल्ली गामों के।
झलमल झड़ोखा के झालर नाँखी अँचरा डोलै धानों के।
चिड़िया चुनमुन बनीजों पे गेलों।
खोता छोड़ी सब्भे परैलों।
बुढ़िया बैठली बोरसी तापै अँचरा खिची कें तनों के।
झलमल झरोखा के झालर नाँखी अँचरा डोलै धानों के।

नरुआ के गद्दी सुगबुग सेजरिया।
चेंगना-चेंगना किलकै झोपड़िया।
खुलथैं टट्टी सोना नाँखी ऐंगन हँसै बनिहारों के।
झलमल झड़ोखा के झालर नाँखी अँचरा डोलै धानों के।
रौदी के मुँ देखी उठलों बुतुरुआ।
साग-भात खाय-खाय गेलों मजरूआ।
संझली-मंझली कचिया सम्हालै होशो नैं ओकरा जाड़ों के।
झलमल झड़ोखा के झालर नाँखी अँचरा डोलै धानों के।।
होलों कलौवों नबथैं बेर।
मौरका मौरकी आँटी के घेर।।
खेतों-घरों में गाँव के बराती बीहा करै छै धानों के।
झलमल झड़ोखा के झालर नाँखी अँचरा डोलै धानों के।।
पत्तन अँटिआवै कोय बच्चा पिलावै।
तोड़ै छै साग कोय जुना बनावै।।
लोरहा के छीना-झपटी करै दौड़ै बच्चा किसानों के।
झलमल झड़ोखा के झालर नाँखी अँचरा डोलै धानों के।।
केसौर-कजौर घौर-कुमीद-कतरनी।
जाय-मलेंजा-रत्ना-चौधानी।।
हाथी भर-भर बोझों लें कें लचकै पुतहुआ गामों के।
झलमल झड़ोखा के झालर नाँखी अँचरा डोलै धानों के।।

आय आबें ऊ दृश्य कहाँ रही गेलै। नै आबें ऊ मौसम रहलै, नै आबें ऊ फसल, आरो नै आबें हौ लोगे। एक तें होनों सिंचाई के बेवस्था नै रैल्है, नैं लोगों में खेती करै के होनों उत्साहे रही गेलै। लोगें आबें रुपया-टाका चाहै छै। धन तें खेती सें भी आबें सकै छै, मजकि लोगों कें टाका आबें खेती सें नै आरो ढंग सें चाहियों। खानों सें चाहियों, खलिहानों सें नै चाहियों। यै लेली खेत के सिंगार बिगड़ी कें रही गेलै।

जे खेत छै, ओकरा सें अलग नया खेत बनाय के इच्छौ लोगों में नै छै। वहें बनलों-बनैलों खेतों सें लोग फसल लेतें चल्लों जाय रैल्हों छै। कोय खेत कै साल तक होने फसल दियें पारें? आखिर ओकरो उपज-शक्ति तें घटवे करतै। आय लोगें ओकरों उपज-शक्ति बढ़ाय लें की

रं खाद डालनें चल्लों जाय रैल्हों छै। खेत जहर उपजावें लागलों छै। आरो यहू बात छै कि वहें रं आबादियो बढ़लों चल्लों जाय रैल्हों छै, तोही सोचों—खेती योग्य खेत वही अनुपातों में बढ़ैलों भी तें नै जावें सकै छै।

विश्व के वैज्ञानिक नें ई कहलें भी छै कि विश्व में खेती लायक जमीन बची भी नै गेलों छै। प्रत्येक देश के पास जे खेती लायक जमीन छै, ओकरै सें ओकरा आपनों जीव-जगत कें पालै-पोषै लें पड़ें। हुन्नें खेती योग्य जमीन नै छै, आरो हिन्नें आबादी बढ़लों चल्लों जाय रहलों छै।

आबादी कें बचाय लें खेतों में रङ-रङ के रसायन देलों जाय रैल्हों छै, ओकरा सें नै खाली फसल में रङ-रङ के बीमारी आवी चुकलों छै, मजकि ओकरा खाय-खाय कें लोगो रोगग्रस्त होलों चल्लों जाय रैल्हों छै। आबादी बचतै की, मरले चल्लों जाय छै। आय सें कै सौ साल पूर्व एक ईसाई पादरी माल्थस नें ठिक्के कहलें छेलै कि जों आदमी आबादी कें रोकै के कोशिश आपन्है सें नै करलकै तें प्रकृति स्वयं ओकरा रोकै लें तैयार होतै आरो ओकरों माध्यम होतै—बाढ़, बीमारी, भूखमरी, अकाल आरनी। आय माल्थस के बात एकदम सही निकली रैल्हों छै। विश्व के बात छोड़ियो देलों जाय तें भारते में की होय रैल्हों छै। आरो एकरों एक्के कारण छेकै कि यहाँ आबादी पर नियंत्रण राखै के कोशिश लें संकल्पबद्ध कदम नै उठैलों जाय रैल्हों छै। यहाँ धर्म, जात ई काम में अड़चन बनी कें आवी जाय छै। नतीजा ई होय रैल्हों छै कि आबादी जलप्रलय नाँखी बढ़लों चल्लों जाय रैल्हों छै। वाशिंगटन स्थित जनसंख्या शोध ब्यूरो नें जे जनसंख्या रिपोर्ट प्रकाशित करनें छै, ओकरों अनुसार ई. १९९९ के मध्य तक में भारत के आबादी ९४६,५९२ मिलियन छेलै, जे ई.२०१० में १.१८३ अरब आरो २०२५ में १.३८५ अरब होय जाय के सम्भावना छै। ई आंकड़ा के अनुसार आय सें कुछ साल बाद भारत के आबादी की रङ होय जैतै, हेकरों अनुमान लगैलों जाबें सकै छै।

आरो तखनी जेहो खेती लायक थोड़ों बहुत जमीन यहाँ बची-खुची गेलों छै, वहू गाँव-नगर में बसी जैतै। खेत में फसल के जग्घा में आदमी जनमतै।

आय जबें भी हम्में एकांत में बैठै छियै, तबें मधेपुरा के हौ खेत,

हौ खलिहान, हौ बनिहारिन के गीत बहुत याद आवै छै। कत्तें-कत्तें रङ चिड़िया-चुनमुन वहाँ उतरतें रहै छेलै। हमरों बाबूजी हमरा सें कहै—बेटी, है सब जे रं-बिरंग के एत्तें बड़ों-बड़ों चिड़िया देखै छों—है आपनों देश के नै छेकै। हिमालय सें पार कहीं दूसरों-दूसरों मुलुक सें आवै छै आरो यहाँ जाड़ा भरी रही कें आपनों-आपनों देश फेरू लौटी जाय छै। हमरों आँखी में ऊ सब दृश्य एकबारगीये घुमें लागै छै। हौ बड़ों-बड़ों चोंचवाली चिरैयाँ हवा कें चीरतें-चीरतें हिन्नें-हुन्नें हवाई जहाज नाँखी उड़तें चिरैयां, इन्द्रधनुषे के रंग सें भरलों हौ सब चिरैया, आरो फेनू नीचें जमीन पर कोशी के लहरैतें आरो कोशिये के धार के साथ ऐतें पुरवा-पछिया के बयार। सबकुछ हमरा याद आवें लागै छै। मधेपुरा में हमरों शौर-सम्बन्धी तें छेवे करलै। हमरों उमरी के जे-जे छेलै, सब के साथ सखा भाव हमरों बनी गेलों छेलै। हमरौसिनी आकाश में उड़तें चिरैया नाँखी धरती पर हिन्नें-हुन्नें फुदकलों फिरयै। कभी खेत, कभियो खलिहान आरो बासा। सबकुछ हमरा अभियो याद छै। खूब याद आवै छै। ई. १६६८ में मार्च के बात छेकै। अंगिका के एक नामी गीतकार राम शर्मा अनलजी, अमरेन्द्रजी के साथ हमरों घरों पर ऐलों छेलात। अमरेन्द्रजी नें ही हुनकों परिचय देलें छेलै आरो फेनू हमरों सिनी के आग्रह पर अनल जी नें आपनों एक गीत सुनैलें छेलात,

बड़ी छगुनी गुनी लिखलें छी पतिया रे
लें लें जहियें हमरों नैहर पुरवैया
कत्तें बछर भेलै मैया देखला से
टोला, परोसा याद आवै पुरवैया
मंदिर-शिवालय जहाँ मठ, गुरुद्वारा शोभै
यहें हमरों नैहर ठिकाना पुरवैया
कमलों रों फलों पर भौरा पर भौरा मँड़राबै जहाँ
भेंटमास पाटी-पाटी नाँचें पुरवैया
महामोद करी नित करै बकुल फूल
केसर क्यारी झूम-झूमी नाँचै पुरवैया
अतिथि कें लोगें जहाँ भगवान मानै रे
पाहन तक पूजा जहाँ पावै पुरवैया

सुबह मंगल लू-लू गावै
दिया बारी संझा सजाबै पुरवैया
छवो ऋतु पारापारी रंग-बिरंग घोरै
कदम्ब नीचें धेनु पगुरावै पुरवैया
आधी-आधी राती जहाँ कुहकै कोइलिया रे
महुआ मदन रस चुवै पुरवैया
वेद, पुराण जहाँ शंख, घड़ियाल बाजै
चंदन ललाट नाँचै, शोभै पुरवैया
भैया सब माथा शोभै फाग केसरिया हे
माता-पिता गीता ज्ञान गावै पुरवैया
बारहो महीना जहाँ पपीहा डाकै नित
बिरहन अनल पुजारी पुरवैया।

हमरा आपनों हौ दिन के जबें भी याद आवै छै तें मधेपुरा के हौ खेत, हौ बासा, हौ सहेली जरूरे याद आवै छै। बहुत बड़ों बासा छेलै मधेपुरा में। आरो वहाँ जों कोय रहै छेलै तें हमरों दादी। नाम छेलै—गुल्लो साहुन, यहें नाम कही कें लोगें पुकारै छेलै। हमरा आभियो तक याद छै—दादी बड़ी नेम-धरम कें मानैवाली औरत छेलै। तीरथ-बैरागन के प्रति बड़ी शौक। देखै में तें बहुत आकर्षक नै छेलै, सांवली ही छेलै, मजकि भीतर के ओल्हैं साफ, दगदग उजरों। ईश्वर के प्रति भक्ति बहुत छेलै दादी में। भजन-कीर्तन में तें डूबले रहै। हुनकों ईश्वर भक्ति के तें यही सें पता लगै छै कि दादी चारो धाम के यात्रा करी चुकलों छेलै। धार्मिक कृत आरो अनुष्ठान में बहुत नियम-कानून मानला के कारण दादी थोड़ों वर्णाश्रम में भी विश्वास करैवाली छेलै। हों, बाबू में है सबके प्रति हम्में कभियो भेद-भाव नैं देखलियै। जखनी हम्में मधेपुरा में छेलियै तें हमरों साथैं हमरों भाय-बहिन तें खेलवे करै छेलै, यै सें अलग गाँव के वहू घरों के लड़की हमरों साथै खेलतें-कूदतें रहै, जेकरों परिवेश दादी के पूजा-स्थान तक निसिद्ध छेलै। सच पूछों तें वै सिनी के साथ हमरों खेलवों भी दादी कें एकदम पसन्द नैं छेलै। यै लेली हम्में ऊ सब सहेली के साथ आपनों बासा सें दूर कहीं अलगे खेलतें-कूदतें रहै छेलियै। कभी नुक्का-चोरी, कभी कबड्डी आरो कभी अठ्ठा-गोटी। नैं तें दिन भर बहियारी

में हेन्हैं कें हट्टों-हट्टों करतें रहियै।

अगहन के समय में साग तोड़वों तें हमरा खूब अच्छा लागै छेलै। एकदम टूसा-टूसा तोड़ी कें लानियै आरो दादी कें दै दियै। भात के साथ साग के हौ स्वाद हमरों जिह्वा आभियो कहाँ भुललों छै। आरो नैं तें भुललों छियै आरी पर चलवों, आकि मेढ़ों पर हौ दौड़।

आय तें रिक्सा छै, रेल छै, हवाई जहाज छै, मोटरगाड़ी छै, स्कूटर छै। तैहिया है सब नै छेलै। हों, गाँव में एक जगह सें दूसरों जगह जाय वास्तें बस बैलगाड़ी ही छेलै। बस बैलगाड़ी। हमरा याद छै कि मधेपुरा सें आपनों बासा पर जाय लेली स्टेशन सें बैलगाड़ी सें जाय लें लागै छेलै। जबें बैलगाड़ी पर हम्में चढ़ियै तें तखनी स्वर्ग के सुख भी जेना चढ़ी जाय छेलै। टप्पर वाली बैलगाड़ी आरो गाड़ी पर बिछैलों हौ पुआल के गद्दी। बैठथै जेना नींद आवें लागै छेलै। मतरकि गाँव-खेत रों दृश्य देखै के लोभ नें भला नींद कहाँ आवें देतियै। बैलों के घंटी के ही टुन-टुन के आवाज आरो गाड़ी के चक्का के चर्र-मर्र के संगीत—जेना आभियो कानो में गूँजतें रहै छै।

यहाँ तक आबै में कत्तें आपनों सगा-सम्बन्धि मिललों होतै। एक से एक्कैस मिट्ठों बात होलों होतै। वै में सें आभियो बहुत बात याद छै, मतरकि ढेरे बात विस्मृत होय गेलों छै। जों कुछु विस्मृत नै होलों छै तें वहें दादी के बात, वहें खेतों के दृश्य, वहें बैलगाड़ी परको सफर, आरो वहें सखा-सहेली सबके साथ दौड़-धूप।

आखिर केना भुलावें पारौं! दादी हमरा छोटका घरों के छौड़ी सिनी साथैं खेलै लें मना करै, मतरकि पहुँची जइयै हम्में वाँही। खाली मधेपुरे के बात नैं छेकै, भागलपुरों में हमरों जे सखा छेलै, वहू कम बदमास नैं छेलै। तैहियो हम्में ओकरों साथ कभियों नैं छोड़ियै, माय-दादी कत्तो मना करै। हमरा याद छै कि हमरे घरों के बगल में एक मारवाड़ी छौड़ी रहै छेलै। भारी बदमास। हम्में तें छेलियै शुद्धि, आकि है कहों कि हमरा होनों बुद्धि नैं छेलै जे हमरों हौ मारवाड़ी सहेली कें छेलै। तखनी हमरा हर रोज कोय-न-कोय मामा तरफ सें एक आना जरूरे मिलै छेलै। आरो जबें घोर अइयै तें हमरों ऊ सहेली, कोय-न-कोय बुद्धि लगावै आरो हम्में रोजाना कत्तों सोचियै कि आय ओकरा पैसा नैं देवै, मजकि ओकरों

मिट्ठों बोली में आवी कें दैइये दियै।

आय हम्में सोचै छियै कि आदमी केन्हों-केन्हों आपनों बोली में रस घोली कें आदमी कें ठगी लै छै। जे आदमी सरल छै, जेकरों सम्पत सब पर विश्वास करी लेवों छेकै, ओकरों ठगाय जैबों तें एकदम आसान छै। हम्मू ठगाय जाय छेलियै। माय कें जबें मालूम हुवै तें बहुत बिगड़वो करै, समझैवो करै आरो यहें कहै कि तोहें ओकरों साथै नैं खेललों करें। मतरकि समझैले से की होय छेलै? हमरा तें होकरो बिना मने नैं लागै। से हम्में फुर्सत मिलत्हैं ओकरे पास पहुँची जैय्यै।

घरों के बगले में एक व्यायामशाला छेलै, जेना कि हमरा याद आवै छै। वही व्यायामशाला में हम्में दोनों सखी जुटियै आरो खेलियै-कुदियै। हमरों हौ मारवाड़ी सखी पैसा ठगै में तें चतुर छेवे करली, बदमासो कम नैं छेली। आरो हम्में आपनों स्वभाव तें बतैइये देलें छियौं। ऊ व्यायामशाला में एकटा काठों के बड़ों बक्सा छेलै। चाय या आरो कुछ चीजों के पेटी होतै, जेकरों एक तरफ मुँह खुल्ला छेलै। हमरों ऊ सहेली हमरा वै में चुकुमकु बैठाय दै आरो फेनू वही बक्सा सें हमरा ढकी दै। ढकिये नैं दै, वै पर बैठियों जाय। जबें हम्में औनाबें लागियै तबें ऊ बक्सा के ऊपरी वाला छेद सें धुरदा गिराय दै आरो नैं तें कभियो-कभियो थूकियो दै। जबें हम्में धुरदा सनल घोंर अइयै तें हमरों ऊ हालत देखी कें माय-दादी कारण पूछै, लेकिन हम्में डरों सें कुछ नै बोलियै। पर यहू नै हुवै कि हम्में हौ सहेली के साथ छोड़ी दियै। हमरा याद छै, जब तांय हमरा दोनों बचपन के सहेली बनलों रहलियै, नै ऊ बदललै, नै हम्में। लेकिन मधेपुरा के जे सहेली छेलै, ऊ भले छोटों घर सिनी के रहै, ओकरों बात-व्यवहार बड़का घरों के लड़की सें कम नै छेलै। ठगी आकि छल वैं सिनी नै जानै छेलै।

हम्में लिखी चुकलों छियै कि दादी वर्णाश्रम कें मानै छेलै, यही सें हमरों सहेली सिनी कें आपनों बिछौना आकि पूजा-स्थान दिश एकदम सें फटकै लें नै दै छेलै, लेकिन हेकरों मतलब ई नै छेकै कि हमरा सिनी जेना-तेना अनसधरों रहौं, तें दादी के बिछौना पर चढ़ी जाँव आकि पूजा स्थल के नगीच चल्लों जाँव। सफाई के प्रति दादी के मनों में बड़ी ख्याल छेलै आरो हमरी दादी कें हमरी सहेली सबके रहन-सहन पसन्द नैं छेलै।

यही बड़का जपाल छेलै कि दादी हमरा आपनों सहेली साथें घरो नैं ढूकै दै।

दादी के पूजा-पाठ, भक्ति-भाव बाबू में भी आवी गेलों छेलै। हमरा याद छै कि बाबू कें जबें भी आपनों वकिलाय आकि घोंर-गृहस्थी के कामों सें फुर्सत मिलै, हुनी गीता-रामायण के पाठ में लगी जाय। भोरे उठथैं हुनी है भजन जरूरे गावै छेलै,

अब कैसे छूटे राम नाम रटी लागी।
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी,
जाकि अंग-अंग बास समानी।।
प्रभु जी तुम घन, बन हम मोरा,
जैसे चितवन चन्द चकोरा।।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती,
जाकी जोती बरै दिन राती।।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा,
जैसे सौनहिं मिलत सोहागा।।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा।
ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

कोय कत्तो शोरगुल करै, हुनी आपनों भजन में लीन रहै छेलै। हों, भजन गावै वक्ती हमरा जरूरे आपनों नगीच बैठाय लै छेलै। जों हुनकों हाथों में कोय धर्मग्रन्थ रहै तें हुनी जरूरे ऊ हमरों हाथों में दै दै आरो हमरा सें ऊ पढ़ै लें कहै। बाबूजी के ई धार्मिक भाव माय में भी खूब छेलै। बाबूजी तें खैर आरो कामों में व्यस्त रहै वाला छेलै, सें ओत्तें भजन-कीर्तन में नैं डुबें पारै छेलै, मतरकि माय के पास हेकरों वास्तें काफी अवकाश छेलै। माय कामो करतें रहै तें ई भजन ओकरों मुँहों में जरूरे रहै,

जाऊँ कहाँ तजि चरण तिहारे?
काको नाम पतितपावन जग?
केहि अति दीन पियारे?
कौन देव बराय विरद-हित हठि हठि अधम उधारे?

खग, मृग, व्याघ्र, पषान, बिटप,
जड़-जन कवन सुर तारे?
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज,
सब माया- बिबस बिचारे।
तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु कहा "अपनणे हारे?"

हमरी माय छेलै बड़ी कुलवन्ती, बड़ी लक्ष्मी। हेना कें हमरों ननिहार परिवार के आर्थिक स्थिति साथें-साथ सामाजिको स्थिति कभियो मजबूत नैं रहलै, बहुत पुरानों पीढ़ी में रहलों रहें तें रहें, मतरकि माय के जनम सें पहिलें आर्थिक-स्थिति ननिहार परिवार के खास्ते रहै। जबें माय रों जनम भेलै तें ननिहार परिवार के दशा में भी परिवर्तन आना शुरू भै गेलै। माय ऐलै तें लक्ष्मियो के हमरों ननिहर परिवार में ऐवों-जैवों शुरू भै गेलै। मामा सिनी कें लाभ होवों शुरू भेलै।

हमरों माय देवकी छों भाय के बीच के बहिन छेलै। तीन आगू, तीन पीछू भाय—हरिहर प्रसाद साह, तबें विष्णु प्रसाद साह, आगू किशुन प्रसाद साह, लक्ष्मण प्रसाद साह, बालगोविन्द प्रसाद साह आरो सत्यनारायण प्रसाद साह। हमरों मामा हरिहर प्रसाद तें नामी वकील छेलै। लक्ष्मण प्रसाद नें डाक्टरी पढ़लकै-लिखलकै आरो बाकी भाय सब व्यवसाय में लागी गेलै। लगन आरो मेहनत सें हमरों मामा सिनी के व्यवसाय भगवान दया सें बढ़लै तें बढ़तें चललों गेलै।

हमरों नानाजी, लालजी साह शोभाराम जोखीराम व्यापारी के यहाँ काम करै छेलै। आपनों ईमानदारी और शील-स्वभाव के कारणें हुनी शोभाराम, जोखीराम के यहाँ आपने लोग नाँखी रहलै। शोभाराम जोखीराम भी हमरों नानाजी कें कभियो नौकर नैं मानलकै, अपनत्व देतें रहलै।

तखिनकों समय में शायद आयकों अपेक्षा मालिक आरो नौकर के सम्बन्ध बहुत अच्छा छेलै। यही लेली कारोबार भी काफी उन्नति पर होय छेलै। एक-दूसरा पर खूब विश्वास छेलै। आय तें नै मालिक कें नौकर पर विश्वास छै, नै तें नौकर कें मालिक पर। दोनों एक-दूसरा कें शंका के दृष्टि सें देखतें रहै छै। मालिक कें हमेशा डॉर बनलों रहै छै कि यैं हमरों साथ कखनियो धोखा करें पारें आरो नौकर ई समझतें रहै छै कि मालिक हमरों शोषण करै छै। बातो गलत नै छै। मालिक आपनों मालिकपनों के

नशा में चूर रहै छै आरो यही नशा के कारणें वें ई देखवे नै करै छै कि ओकरों व्यवसाय कें चलावैवाला मजदूरों के की स्थिति छेकै? ओकरों की जरूरत छै? यही कारण सें मजदूरों के मनों में असंतोष बनलों रहै छै आरो नैं ओकरा मालिक के प्रति श्रद्धा होय छै, नैं वैं यै दिस ध्यान दै छै कि कारोबार केना आगू बढ़ें। हम्में ई नै कहै छियै कि मालिक आरो मजदूर में अन्तर नै हुवें। अन्तर तें होवे करतै। केना नै होतै? एक मालिक छेकै आरो दूसरों मजदूर। मजदूर सिर्फ आपनों शरीर के इस्तेमाल करै छै, जबेंकि मालिक पैसा लगाय छै आरो पैसा के साथ-साथ आपनों दिमागो लगाय छै। मजदूर सें दुगना-तिगुना योग्यता होय छै मालिक के। तें जेकरा योग्यता ज्यादा होय छै, ओकरा सुविधो ज्यादा होवे करतै।

जों होकरों सुविधा ज्यादा नै होतें तें आखिर में आपनों दिमाग के इस्तेमाल ज्यादा कैन्हें करतै। आय समाज में एक विचित्र व्यवस्था आवी रहलों छै, जे नैं आपनों दिमाग के विशेष इस्तेमाल करै छै आरो नै आपनों शरीर के। वें चाहै छै कि हमरा वही रङ के सुविधा मिलै, जोंन सुविधा पढ़लों-लिखलों पेशा वाला कें मिलै छै, भला केना हुवें पारें? बराबरी के हेनों सिद्धांत तें समाज में अव्यवस्था ही लानें पारें।

कोय भी सोचें पारै छै कि जहाँ हेनों बराबरी के सिद्धांत लागू करी देलों जैतै, तें ऊ देश के लोगों में असंतोष उमड़तें-घुमड़तें रहतै आरो देश के सर्वतोमुखी विकास नैं हुवें पारें। सर्वतोमुखी विकास नै हुवें पारे जबें कोय राष्ट्र के नागरिक कें होकरों योग्यता के मुताबिक ही होकरों पारिश्रमिक, ओकरों सुविधा के खयाल राखलों जाय।

आय हमरों देश में एक विचित्र स्थिति पैदा होय गेलों छै कि चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियो सिनी प्रथम श्रेणी के कर्मचारी वाला वेतन, बोनस, भत्ता के मांग करें लागलों छै। आरो आपनों राजनीतिक लाभ लेली कुछु राजनेत्हौ ई सब मांग कें बीचों-बीचों में हवा देतें रहै छै। मानी लेलों जाय की हेनों व्यवस्था कायमे करी देलों जाय तें हेकरों परिणाम की होतै? हेनों परिस्थिति में तें प्रथम श्रेणी के कर्मचारी आपनों योग्यता मोताबिक राष्ट्रपति के सुविधा के ही मांग करतै। आरो नैं मिलला पर आपनों काम में कमी करी देतै। आपनों दिमाग के उपयोग करना बन्द करी देतै आरो जबें हेनों करी देतै तबें ऊ देश आरो समाज के प्रगतियो

रुकी जैतै।

लेकिन हेकरों मतलब यहू नैं होय छै कि मजदूरों के हितों के अवहेलना करलों जाय। जों मजदूरों के श्रम नै लगतै तें अकेला बुद्धिये की करतै? दिमाग के जोर तभिये चलै छै जब तांय देह मजबूत रहै छै, श्रम करै के ताकत रहै छै। यही लें श्रमिक के महत्व केन्हों कम नैं आँकलों जावें सकें। होकरों हित, होकरों सुरक्षा सरकार के साथ-साथ समाज के लोग्हों पर निर्भर करै छै। जों श्रमिक के स्वास्थ्य अच्छा नैं होय छै, जों होकरों मानसिक मनोरंजन के व्यवस्था नैं होतै, ओकरों साथें जों कोय तरफ के सामाजिक अव्यवहार होतै तें सामाजिक उन्नति, राष्ट्रहित के बात सोचवों एकदम व्यर्थ होतै।

हमरों नाना शोभाराम जोगीराम के हमेशे बड़ाय करतें रहै छैलै। मालिक आरो श्रमिक के बीच तें हेने व्यवस्था रहना चाहियों कि दोनों एक-दूसरा के बड़ाय करें।

बाबू छैलै एकदम स्वतंत्र मिजाज के आदमी। यही सें सरकारी नौकरी के तें हुनी बाते कभियो नैं सोचलकै। हुनी जानै छैलै कि सरकारी नौकरी में कत्तें जी हुजूरी करै लें लागै छै। होकरौ में ऊ जमाना छैलै अंग्रेजों के। जे भारतीय अंग्रेजी सरकार के नौकरी स्वीकार करै छेलै, ओकरा तें बस भेड़े-बकरी नाँखी खटतें रहैलें पड़ें छैलै। ऊ आदमी के आपनों कान रहतें कान नैं रहै छेलै, आँख रहतें आँख नै रहै छेलै, मुँह रहतें मुँह नै रहै छेलै, आरो दिमाग रहतें दिमाग नैं रहै छेलै। जे हिन्दुस्तानी अंग्रेजी सरकार के नौकरी करै छेलै, ऊ तें बस टमटम या बैलगाड़ी के टट्टू आकि बैले होय छेलै। खाली मालिकों के ईशारा पर चुपचाप नाँचतें रहौ। से हमरों बाबूजी नें नौकरी करै के बाते नैं सोचलकै। हुनी कहवों करै छेलै—नौकरी तें निर्घिन काम छेकै। केकरो गुलामी बजैवों कि आदमी के स्वभाव के अनुकूल हुवें पारें? बाबूजी हमेशा कहै—आदमी के सम्पूर्ण विकास तभिये हुवें पारें जबें ऊ बन्धन सें मुक्त हुवें पारें। यही लेली हुनी व्यपार कें नौकरी सें ज्यादा श्रेष्ठ बतावै। ई बात ठीक छेकै कि हुनी व्यापार नैं करलकै, मतरकि केकरो गुलामियो नै करलकै। पेशा वास्तें हुनी चुनलकै वकिलाय के रास्ता। आरो हुनी जोंन पेशा में गेलै तें काफी ख्यातियो पैलकै। बाबूजी नामी वकील बनी गेलों छेलै आरो यै में कोय

दू-मत नैं छेलै कि बाबूजी कें है ऊँचाई तक पहुँचाय में हमरी माय के योगदान बहुत अधिक रहलै।

लोगें स्त्री के बारे में, पता नैं की-की कहतें ऐलों छै। ऋषि-मुनी सें लैकें आयतक के लोगें बहुत कुछ कहलें छै जनानी वास्तें। जहाँ नारी वास्तें यहू कहलों गेलों छै कि जोंन धरती पर पुरुष स्त्री के पूजा करै छै, वहाँ देवता प्रसन्न होय छै। वैदिककाल में तें स्त्री सचमुच में अर्द्धांगिनी छेलै। यही वास्तें देवतौ अर्धनारीश्वर छेलै। एकरों मतलब ई होलै कि प्राचीन समय में स्त्री-पुरूष में प्रतिष्ठा के स्तर पर कोय भेद नैं छेलै। आपनों-आपनों कर्म सें दोनों ही सर्वोच्च पदों पर आरूढ़ होय छेलै आरो सच बात तें ई छेलै कि तखनी स्त्री में आपनों धर्म के प्रति, आपनों कर्तव्य के प्रति एत्तें लगन छेलै कि ऊ पुरुषों सें ज्यादा सम्मानित छेलै।

पता नैं, कबें स्त्री के प्रति लोगों कें मनों में भेद बुद्धि आना भै गेलै। जे स्त्री पुरूष रूपी प्रश्न के उत्तर छेलै, ऊ खुद प्रश्न शुरू बनी कें रही गेलै; जे स्त्री कभी भवसागर में डूबतें पुरूष कें उबारी लै के सामरथ राखै छेलै, ऊ खुद पुरूष के नजरी में भवसागर बनी गेलै—पुरूष कें ऊ सागर में डुबावै वाली। स्त्री के प्रति अपमान अविश्वास के परम्परा जुड़ें लागलै। ओकरों प्रति तरह-तरह के लांछन कथा गढ़ें जाबें लागलै। मतरकि ई सब कोय बदनीयत किसिम के आदमी के ही चाल होतै, जें समाज में स्त्री के सम्मान के अपमानित करबों शुरू करलें होतै। नैं तें स्त्री होवों तें महान साधना के पुण्यफल ही मानलों जैतै। कत्तें कष्ट आरो कर्तव्य कें स्त्री एक साथैं दोनों हाथों सें उठैतें-ढ़ोतें चलतें रहै छै। बिना कोय परेशानी आरो अनिच्छा के भाव आपनों चेहरा पर लानल्हैं। की है कोय सामान्य बात छेकै?

जखनी हम्में हिन्दी सें एम.ए. के तैयारी करी रहलों छेलियै, तबें जयशंकर प्रसाद आरो रामधारी सिंह दिनकर के बहुत सिनी पंक्ति हमरा बहुत प्रभावित करतें रहें। अभी तांय करी रहलों छै। प्रसाद जी के ई पंक्ति,

नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत के नग-पग तल में,
पीयूष स्रोत-सी बहा करो जीवन के सुन्दर तल में,

आरो रामधारी सिंह दिनकर के है एक पंक्ति कि,

पगली कौन व्यथा है
जिसको नारी नहीं सहेगी!

तें आय तक हमरों जीवन-यात्रा के पाथेय नाँखी ही बनी चुकलों छै। हालांकि है बात हमरों शादी के बहुत वर्षों के बाद के बात छेकै, जखनी हम्में कै सन्तान के माय आरो पोता-पोती के दादी बनी चुकलों छेलियै। मतरकि जबें भी हम्में प्रसाद जी के 'कामायनी' आरो दिनकर जी के 'उर्वशी' कें पढ़ियै तें हठाते हमरा आपनों नानी आरो अपनी माय के याद आबी जाय।

नारी के की धर्म छेकै? ओकरों चरित्र केन्हों होना चाहियों? परिवार में ऊ केना कें रहें? माय हमरा हमरों आठ साल के बाद सें समझाना शुरू करी देनें छेलै, यै वास्तें माय हमरा सें रामचरितमानस के ई सब चौपाई तें फुर्सत मिलथैं पढ़वाय दै छेलै,

मातु पिता भ्राता हितकारी
मितप्रद सब सुनु राजकुमारी
अमित दानि भर्ता बयदेही
अधम सो नारि जो सेवन तेही
धीरज धर्म मित्र अरु नारी
आपद काल परिखिअहिं चारी
वृद्ध रोगबस जड़ धनहीना
अंध बधिर क्रोधी अति धीना
ऐसेहु पति कर किए अपमाना
नारि पाव जमपुर दुःख नाना
एकइ धर्म एक व्रत नेमा
कायँ वचन मन पति पद प्रेमा
जग पतिव्रता चारि बिधि अहहीं
वेद पुराण संत सब कहहीं
बिनु अवसर भय तें रह जोई
जानेहु अधम नारि जग सोई
पति बंचक परपति रति करई
रौरव नरक कल्प सत परइ

छन सुख लागि जनम सत कोटी
दुःख न समुझ तेहि सम को खोटी
बिनु श्रम नारि परम गति लहई
पतिव्रत धर्म छाड़ि छल गहई
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाइ
तिधता होइ पाइ तरूनाई

आरो माय के नगीच बैठी कें हमरों ई रामायण पाठ नें हमरों वैवाहिक जीवन कें काफी प्रभावित करलकै, शायद ई मानै लें आबें कोय तैयार नैं होतै कि हम्में आपनों जीवनसाथी कें कत्तें आत्मा के साथ स्वीकारलियै। हमरा ससुराल में उपेक्षा मिलतें रहलै। कौन-कौन दुख नै झेलै लें पड़लै, आरो कोंन तरह नै हमरा पति के उपेक्षा मिललै, मतरकि सबके सुख कें कसौटी मानी कें, ई जीवन के भोग मानी कें सही लेलियै। जीवनसाथी के प्रति एत्तें समर्पण के बादो जे हमरा हुनकों स्नेह मिलना चाहियों, कहाँ मिलें पारलै? तभियो हम्में सीता के ई वचन आपनों मनों सें जोड़ले रखलियै,

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई
प्रिय परिवारू सुहृद समुदाई
सासु ससुर गुर सजन सहाई
सुत सुंदर सुसील सुखदाई
जहँ लगि नाथ नेह अरू नाते
पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू
पति बिहीन सबु सोक समाजू
भोग रोगसम भूषन भारू
जम जातना सरिस संसारू
प्राननाथ तुम्ह बिनु जगमाहीं
मो कहूँ सुखद कतहुँ कछु नाहिं
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी
तैसिअ नाथ पुरूष बिनु नारि

नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे
सरद बिमल बिधु बदनु निहारे

हम्मू जगत जननी सीते नाँखि पति के सुख-दुख में हाथ बटाय लें चाहै छेलियै, मतरकि हमरा हौ सौभाग्य नै मिललै। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त नें लिखनें छै,

सखी दोनों ओर प्रेम पलता है
फतंगा जलता है तो दीपक भी जलता है

मतरकि आपनों वैवाहिक जीवन में हम्मी दीया नाँखी जलतें रही गेलां। हमरा एकरों दुःख नै छै। गौरव ही छै। आखिर नारी जीवन तें समस्त दुख सही कें भी आपनों जीवन सें समाज के बीच महान आदर्श राखना ही छै,

इतिहासों की सकल दृष्टि केन्द्रित
बस एक क्रिया पर
किन्तु नारियाँ क्रिया नहीं,
प्रेरणा, प्रीति करूणा है
उद्गम-स्थली अदृश्य, जहाँ से
सभी कर्म उठते हैं
नारी क्रिया नहीं, वह केवल
क्षमा, शान्ति करूणा है
इसीलिये, इतिहास पहुँचता
जमी निकट नारी के हो रहता वह
अचल या कि फिर
कविता बन जाता

जखनी हम्में आपनों ऋषि आरो मनीषि कवि के वचन याद करै छियै, आरो आयकों नारी-जीवन कें देखै छियै, तें दुख ही नैं, भय भी हुवें लागै छै। कत्तें परिवर्तित होय गेलों छै हमरों नारी-समाज। आय सीता, अनुसुइया के कथा पिछड़ापन के प्रतीक बनी गेलों छै। तर्क देलों जाय छै कि सीता-अनुसुइया के विचार गुलाम नारी के विचार छेकै, जेकरा पुरुष नें हजारो-हजार वर्ष गुलाम राखी कें हेनों विचार दै लेली मजबूर करनें छै।

मतरकि हमरों विचार सें है तरह के आधुनिक विचार भारतीय पुरूष आकि नारी के नैं हुवें पारें। भारत में जे नारी आरो पुरूष नारी स्वतंत्रता के आधुनिक रूप के पक्ष में बयान दै रहलों छै, ओकरों विचार के जड़ भारत के मिट्टी में नैं होय कें विदेश के मिट्टी में गड़लों छै।

भारत के मिट्टी भोगवादी मिट्टी नैं छेकै, भोग के संस्कृति विदेश सें ऐलों छै, जहाँ नारी के स्वतंत्रता के बहाना नारी के नंगापन पर बल देलों जाय रहलों छै।

है तरह के विचार योगमूलक नैं छेकै, जे समाज आरो परिवार कें जोड़ै छै, आय पश्चिमी देश के नारीवादी आन्दोलन भारत में पहुँची कें परिवार में पुरूष के सत्ता कें ही चुनौती दै रहलों छै आरो ई कहलों जाय रहलों छै कि नारी के अस्तित्व लेली पुरूष के कोय जरूरत नैं छै। यहाँ तक कि वैवाहिक जीवन के भी नैं। विवाह के कारण ही स्त्री परिवार में बंधी कें गुलाम बनी जाय छै।

ई सब विचार बाहर सें ऐलों विचार छेकै। आपनों समाज में स्त्री के महत्व ही बनले रहलों छै। खास करी कें हिन्दू-समाज मातृ सत्तात्मक समाज ही छेकै। दुर्गा, काली, सरस्वती, तारा—सबके सब उपास्य देवी। आरो जबें-जबें पुरुष पर विपत्ति ऐलों छै, स्त्री नें ही ओकरों उद्धार करनें छै। फेनु ई कहना कि भारत में स्त्री पुरुष के गुलाम बनी कें रहलों छै, ई भारतीय समाज के परिवार कें तोड़े के एक भारी विदेशी षड़यंत्र छिकै, जे षड़यंत्र में हमरों देश के कुछ स्त्री-पुरूष भी लागलों होलों छै।

तबें हम्में यहू नैं कहै छियै कि जहाँ पुरूष के अत्याचार हुवें, वहाँ ओकरा चुपचाप सहतें रहना चाहियों, कम-सें-कम विरोध तें जरूर करना चाहियों, हों ई विरोध अहिंसात्मक होना चाहियों, हिंसात्मक नैं।

जबें हमरों साथ अत्याचार शुरू होलै, तें एक अहिंसात्मक विरोध हम्मू करना शुरू करलियै, ई विरोध छेलै आपनों पति के खिलाफ खड़ा नैं होय कें आपनां कें सब तरह सें सामर्थ्यवती बनाना आरो यहीं सें हम्में पढ़ै-लिखै पर आरो मौन लगाय देलियै।

हमरों बाबूजी तें बच्चा कें पढ़ाय-लिखाय के पक्षों में हमेशे रहै। से जबें हमरा में बीहा के बाद पढ़ै-लिखै के प्रबल इच्छा देखलकै, तें हुनी पढ़ाय-लिखाय वास्तें एक गुरूदेव भी ठीक करी देलकै। जबें तखिनकों

समय के बात हम्में याद करै छी तें एक अजीब तरह के अनुभूति होय छै—सुख के अनुभूति। सोचै छियै, तखिनकों आरो आयकों समय में कत्तें अन्तर आबी गेलों छै। तबें आरो विद्यार्थीसिनी नाँखी हम्मू पढ़े-लिखै में एत्ते लीन रहियै कि दिन-रात के होश-ठिकानों नैं रहै। तबें हमरों साथ हमरों गुरूओजी कम मेहनत नैं करै छेलै। हुनकों बस एक्के इच्छा रहै कि कत्तें ज्यादा-सें-ज्यादा हम्में जानी लौं। तबें ऊ आयकों समय नैं रहलै कि घंटा भरी वास्तें गुरूजी ऐल्हौं आरो घंटा पूरै के पैहनें चली देलकौं, तखनी गुरूजी कें पैसा के मोह नैं छैलै। है नैं छेलै कि मंगनिये में हुनकासिनी के ज्ञान लेलों जाय छेलै। बात ई छेलै, जतना टें हुनकों अर्थदान करलों जाय छेलै, ओकरा सें ज्यादा ही हुनी ज्ञान-दान करै वाला होय छेलै। आयकों शिक्षक कें नैं तें ओत्तें ज्ञान छै, नैं दान करै के प्रवृत्ति। जे कुछ छै, बस झूठ-सांच पढ़ाय के ढीब-ढाब देखाय कें पैसा अर्जित करी लेबों आरो जे शिक्षक में पूरा ज्ञान नैं छै आरो जे शिक्षक में पैसा सम्पत्ति के प्रति मोह छै, ऊ गुरू आकि ज्ञानी केना कहाबें पारें!

हमरों गुरूजी हमरा भरथरी के श्लोक रटाबै छेलै, जेकरों कुछ श्लोक हमरा अभी भी याद छै। जेना,

केयूराणि न भूषयन्ति
पुरूषं हारा न चन्द्रोज्जवला
न स्नानं न विलेपनं
न कुसुमं नालंकृता मूर्द्धजाः
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं
यासंस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं
वाग्भूषणम् भूषणम्

कहै के मतलब ई छेकै कि पुरुष कें कंगन, चन्द्रमा के समान खूब्बे उजरों मोती के हार, स्नान, उबटन, चंदन आरनी के लेप, सुगन्धित फूल आरो भूषित केश आरनी सोभायमान नैं करै छै, मजकि व्याकरण आरनी सें सोभायमान होय छै। दोसरों अलंकार तें समय पाबी कें नाश होय जाय छै, मतरकि वाणी रूपी भूषण तें जीवन भर बनलों रहै छै। ऊ नष्ट नैं होय छै। गुरूजी के साथ हम्मू ई सब श्लोक रोज एक बार

दुहरय्यै।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं
प्रच्छन्न गुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी
विद्या गुरूणां गुरुः
विद्या बंधुजनो विदेश गमने
विद्या परा देवता
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं
विद्या विहीनः पशु

पर साथे-साथ गुरूजी आखिरी में यहू श्लोक जरूरे पढ़ै छेलै,

सूनुः सच्चरितः सती प्रियतमा
स्वामी प्रसादोन्मुखः
स्निग्धं मित्रमवंचकरू परिजनो
निः क्लेशलेशं मनः
आकारो रूचिर स्थिरश्च
विभवोविद्यावदांत मुखं
तुष्टे विष्टपकष्टहारिणी
हरौ सम्प्राप्यते देहिनाम्।

आरो फेनु गुरूजी बड़ा तल्लीन होय कें हेकरों मानें समझावै कि संसार के सब्भे प्रकार के कष्टों कें नाश करैवाला भगवान विष्णु के प्रसन्न होला पर ही सच्चरित्र पुत्र, पत्नीव्रत धर्म कें पालन करै वाली पत्नी, प्रसन्न मुख वाला स्वामी, सच्चा साथी आरो मित्र, अवंचक परिजन, क्लेश आरो पीड़ा रहित मोॅन, सुन्दर रूप, स्थायी सम्पत्ति आरो विद्या सें देदीप्यमान चेहरा आरनी प्राप्त होय छै।

हमरों गुरूजी के प्रतिभा सें बाबूजी कम प्रभावित नै होलै। हुनकों प्रति जत्तें हमरों मनों में श्रद्धा छेलै, ओकरा सें कम बाबू-माय के मनों में नै छेलै।

आय कल तें पंडित, गुरू, ज्ञानी के माने-सम्मान खत्म होय गेलों छै। न समाज में हौ रंग के सम्मान गुरूजी के रही गेलों छै आरो नैं सरकारे के द्वारा पण्डित वर्ग सम्मानित रही गेलों छै। एक समय छेलै, जबें

राजसत्ता ज्ञानी सिनी के सामना में नत मस्तक रहै छैलै। देश के शासन व्यवस्था में ज्ञानी सिनी के हाथ होय छेलै। चाणक्य एक उदाहरण छेलै। मतरकि आय तें पंडित सिनी कें घोर उपेक्षा के नजरी सें देखलों जाय छै। नतीजा ई छै कि शासन के संस्कार खतम होय गेलों छै।

कभियो राजा भरथरी नें पंडित, ज्ञानी के महत्व आरो हुनकों सिनी के सामना राज सत्ता कें तुच्छ बतैतें हुवें राजा सिनी कें चेतैनें छेलै,

शास्त्रोपस्कृतशब्द सुन्दर गिरः
शिष्यप्रदेयागमा
विख्याता कवयो वसन्ति विषये
यस्य प्रभो निर्धनाः
तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य
सुधियस्त्वर्थ विनाऽपीश्वराः
कुत्स्याः स्युः कुपरीक्षका हि
मणयो यैरर्धतः पातिता
हर्तुर्याति न गोचरं किमति
शं पुष्णाति यत्सर्वदा
अप्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं
प्राप्नोति वृद्धि पराम्
कल्पान्तेस्वपि न प्रयाति
निधनं विद्याख्यमन्तर्धनम्
येषां तान्प्रति मानुमज्झन नृपाः
कस्तैः सह स्पर्द्धते।

शिक्षा लेली हमरों बाबूजी के मनों में एत्तें लगाव छेलै कि जखनी फुर्सत मिलै, हुनी रामायण गीता-पुराण लैकें बैठी जाय आरो पाठ करना शुरू करी दै। खाली पढ़बे सें हुनका शौक नैं छेलै, मजकि लिखथौं रहै के हुनका में भारी शौक छेलै। आपनों जीवन के खास-खास बात कें हुनी डायरी के रूपों में जरूर लिखै। घूमै-घामै के शौक तें हुनका में खूब छेवे करलै। हुनी जहाँ-जहाँ जाय छेलै, वहाँ-वहाँ करों अनुभवो कें आपनों डायरी में जरूरे लिखै छेलै।

हाल ताय हुनकों हाथों के लिखलों कॉपी हमरों पास सुरक्षित

छैलै। अभियो भी कही-न-कहीं ऊ जरूर होतै। मतरकि थोड़ों नैं, हमरा ई बातों के बहुत दुख छै कि बाबूजी के हाथों के लिखलों ऊ सब यात्रा-विवरण, संस्मरण—कुछुवे नैं जोगाय कें राखें पारलियै।

बाबू शिक्षा के प्रति एत्तें लगाव राखै छेलै कि खाली हमरे सिनी के प्रति नैं, गोतिया-लोइया के जे भी बाल-बच्चा आवै, सबकें हुनी पढ़ै-लिखै के उपदेश जरूर दै छेलै। हमरा याद छै कि जखनी गौराङ्ग (गौराङ प्रसाद शाह) कुछ बच्चा साथै हुनकों नगीच आबै तें गौराङ्ग दिस बाबू ईशारा करतें माय सें कहै—'देखियौ आगू चली के गौराङ्गे परिवारों में नाम-धाम करतौं, हेकरों लिलार बताय छै कि ई कवि पंडित निकलतौं।'

हमरा पढ़ाय-लिखाय के पीछू तें बाबू के चौबीसो घंटा ध्यान लागले रहै। हों, माय के मोॅन पढ़ाय-लिखाय सें ज्यादा ई बात के चिन्ता रहै कि कॉंही भूखलों-प्यासलों स्कूल नैं भागी जाय। कत्तो स्कूल के घंटी बजी गेलों रहें, माय बिना खिलैलें-पिलैलें स्कूल नै जावें दै, चाहे हम्में कत्तो नाराज कैन्हें नी होइये।

माय जत्तें सीधी-साधी छेलै, ओत्ते ओकरा पैहनावा-ओढ़ावा के प्रति ख्याल नैं। ओकरा एक्के बात के चिन्ता छेलै कि हम्में कहीं भूखलों नैं रही जाँव। भले हम्में ढमढोल कुरता में स्कूल जाय रहला छी तें माय कें एकरों कुछ चिन्ता नै छेलै।

माय के हाथों के खाना पड़ोस भरी में कोय्यो जनानी नै उतारें पारें। माय जे सब्जी आकि मिठाय तैयार करै छेलै, ऊ बड़का-बड़का रोसोइयो की करें पारतियै। जखनी खाना बनी कें उतरै तें भरलो पेट कें भूख लगी जाय। रसोई घर सें सब्जी के सुगंध बाहर निकलै कि कोय-न-कोय टोला-पड़ोस के दू-एक आदमी जरूरे हाजिर होय जाय।

माय के स्वभावो हेनों छेलै कि बिना केकर्हौ खिलैनें ओकरा खाना नैं सोहावै आरो खाना खिलाबै तें एकदम मनों सें। हमरा में जे कुछ भी खाना बनाय के गुण आवें पारलों छै, ऊ सब माय केरों देन छेकै, हम्में खाना में जल्दीबाजी नैं करें सकौं, गंदगी नैं बर्दाश्त करें सकौं। है सब बात हम्में अपनी माय सें सीखलें छीयै।

वें हमेशा कहतें रहै—आदमी जेन्हों भोजन करै छै, होने ओकरों मोॅन शरीर बनै छै, अच्छा विचार लेली तें कभियो भी खराब भोजन आकि

अनमना सें बनैलों भोजन नैं करना चाहियों। मनों सें बनैलों गेलों खाना अमृत के समान होय छै।

शुद्ध खाना के अतिरिक्त दैनिक जीवन लें माय के आपनों कुछ कार्य-कलाप छेलै। सिर्फ आपने लें नैं, मतरकि वें यहा सब बात सब्भे कें समझावै, ऊ सब कें जेकरा माय मनों सें चाहै छेलै। माय जे कुछ समझावै, ओकरा में कुछ हेना कें छेलै कि,

१. फरचों होय के पैहनें जगना चाहियों।

२. भोरे उठी के आरो सांझौं, जत्ते देर तक हुवें पारें, मौन रहै के साधना करना चाहियों।

३. सुबह-शाम प्रार्थना तें जरूरे करना चाहियों। मौन रहला सें जहाँ आत्मा के ताकत बढ़े छै, वहाँ प्रार्थना सें आत्मा निर्मल होय छै।

४. भजन करै में ताली के उपयोग जरूर करना चाहियों। एकरा सें शरीर के सब रोग दूर होय जाय छै।

५. पूजा, प्रार्थना वास्तें जे जगह छै, वहाँ सब नैं पहुँचें।

६. काम करथौं ईश्वर में मोंन लगैलें रखना चाहियों।

७. रसोई घर में हमेशे सफाई बनलों रहना चाहियों।

८. जेन्हों-तेन्हों हालतों में रसोई घर एकदम नैं जाना चाहियों।

९. खाना जहाँ-तहाँ केकरो हाथ के बनैलों नै खाना चाहियों।

१०. जे शुद्ध मनों सें खिलाबें, ओकरे भोजन खाना चाहियों।

११. घरों के बड़ों-बूढ़ों के सम्मान होना चाहियों।

१२. बाहर सें ऐलों अतिथि कें देवतातुल्य मानना चाहियों।

१३. घरों में अशांति होला सें देवता दूर जाय बसै छै।

१४. आदमी कें हमेशा सत्संग सें जीवन सुधारना चाहियों।

१५. केकरहौ करलों उपकार कें कभियो नैं भूलना चाहियों।

१६. हमेशे कोशिश करना चाहियों कि एक उपकार के बदला हम्में ऊ व्यक्ति के दू उपकार करें सकौं।

१७. घरों में कोय मेहमान आबें तें घर के औरत कें घूंघटे में रहना चाहियों।

१८. जे कुछ भी आदमी दान करें, ऊ सब कें सुनाय-बोली कें नैं। चुपके-चुपके दान करना चाहियों।

१६. जखनी घरों में प्रार्थना आकि पूजा हुवें, घरों में शान्ति रहें।

२०. रात गिरै सें पहलैं बाहर रहै वाला कें घोंर आबी जाना चाहियों।

२१. आरो आखिरी में माय ई बातों पर बहुत बल दै छेलै कि बड़ों-बूढ़ों कें प्रणाम गोड़ छूबी कें आकि झुकी कें ही करना चाहियों।

माय है नियम खाली दूसरे वास्तें नैं बनैलें छेलै, मजकि आपनों ऊपर भी ओतनें कड़ैती सें लागू करै छेलै। हमरा में है माय के ही गुण ऐलों छै कि हम्में है उमरी ताँय साफ-सुफैय्यत पर एत्तें ध्यान दै छियै। माय कें भी गंदगी बर्दाश्त नैं छेलै आरो हमरौ गंदगी बर्दाश्त नै होय छै।

आय देश-दुनिया में यहा सफाई पर सें आदमी के ध्यान उठी गेलों छै, जेकरों कारण कि सौंसे पर्यावरण आय गंदा दिखै छै। खाली घोंर द्वार के बात नैं छै, बल्कि सबसें बड़ों चिंता के विषय छेकै कि हमरा सिनी के गंदा रहै के आदत नें आय सौंसे देश के जलस्रोत कें ही गंदा करी देनें छै। कभी गंगा सब के पाप साफ करै छैलै, आय गंगा खुद दूषित होय गेलों छै। गंगा के दूषित होला के कारण आय देश में आर्थिक संकट भी बड़ी तेजी सें खाड़ों होय गेलों छै। मछली-उद्योग तें जेना खतमे होय पर छै।

जेना माय घर-गृहस्थी वास्तें कुलवंती नारी छेलै, होने कें हमरों बाबू देश आरो समाज लेली राष्ट्रपुत्र बनी गेलों छेलै। दिन-रात पराधीन भारत के स्वाधीनता लेली चिन्तित रहै। हम्में जबें भी हुनका देखियै, गुलाम भारत के मुक्ति लेली कुछ-न-कुछ योजना बनैतें देखै छेलियै।

तखनी हमरों घोंर राष्ट्रभक्त सिनी के अड्डा बनी चुकलों छेलै, बड़ों-बड़ों कांग्रेसी नेता हमरों बाबूजी नगीच ऐतें रहै छेलै। बाबूजी दिन-रात देश के कोंन भागों में कोंन तरह के राजनीतिक घटना घटी रहलों छै, हेकरों खबर राखै।

हमरा याद छै कि कुछु नवयुवक कांग्रेसी हमरों घरों पर आवै तें बाबूजी रघुवीर सहाय के नामी गीत ऊ नवयुवक सिनी के साथें मिली-जुली कें गावै छेलै। हमरौ साथ बैठाय लै। जबें एकांत में रहियै, तभियो बाबूजी हमरा आपनों पास बैठावै आरो ई गीत गावै लें कहै,

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से

मोरे प्रान बसे हिमखोह रे बटोहिया
एक द्वार घेरे राम हिम कोतवलवा से
तीन द्वार सिंधु घहरावै रे बटोहिया
जाऊ-जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ
जहवां कुहुकि कोइली बोले रे बटोहिया
पवन सुगन्ध मन्द अगर गगनवां से
कामिनी विरह राग गावे रे बटोहिया
विपिन अगम घन सघन बगन बीचे
चम्पक कुसुम रंग देवे रे बटोहिया
द्रुम बट पीपल कदम्ब निम्ब आम बृक्ष
केतकी गुलाब फूल फूले रे बटोहिया
तोता तूती बोले राम बोले भेंगरजवा से
पपिहा के पी-पी जिया साले रे बटोहिया
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से
मोरे प्रान बसे गंगाधार रे बटोहिया
गंगा रे जमुनवां के निर्मल पनियां से
सरजू झमकि लहरावै रे बटोहिया
ब्रह्मपुत्र पंचनद घहरत निसि दिन
सोनभद्र मीठे स्वर गावै रे बटोहिया
अपर अनेक नदी उमड़ि घुमड़ि नाचे
युगन के जदुआ जगावै रे बटोहिया
आगरा प्रयाग काशी दिल्ली कलकतवा से
मोरे प्रान बसे सरजू तीर रे बटोहिया
जाऊ-जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ
जहाँ ऋषि चारो वेद गावै रे बटोहिया
सीता के विमल जस राम जस कृष्ण जस
मोरे बाप-दादा के कहानी रे बटोहिया
व्यास बाल्मीकि ऋषि गौतम कपिलदेव
सूतल अमर के जगावै रे बटोहिया
रामानुज रामानन्द न्यारि प्यारि रूपकला

ब्रह्म सुखबन के भँवर रे बटोहिया
नानक कबीर गौरी शंकर श्रीराम कृष्ण
अलख के गतिया बतावै रे बटोहिया
विद्यापति कालिदास सूर जयदेव कवि
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया
जाऊ-जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ
जहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया
बुद्धदेव पृथु वीर अरजुन शिवाजी के
फिर-फिरि हिय सुधि आवै रे बटोहिया
अपर प्रदेश देश सुभग सुघर वेश
मोरे हिन्द जग के निचोड़ रे बटोहिया
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेहि
जन 'रघुबीर' सिर नवावै रे बटोहिया

मतरकि एक आरो गीत छेलै, जेकरा बाबूजी आपनों एकांतों में भजन नाँखि गैतें रहै छेलै। बड़ी भक्ति भाव सें भरलों,

जैति जै जै पुण्यधाम धम्म की अमल भूमि
जैति जै श्री भारत भवानी मेरी जननी
कोऊ जीवै धन हित कोऊ जीवै जन हित
मेरे प्राण तू ही महरानी मेरी जननी
तीन ओर सिन्धु तेरे नाम बल गरजत
घूमि-धूमि करे निगरानी मेरी जननी
उत्तर हिमाल-गिरि अरि राह छेके वीर
राखे तीख तरख जवानी मेरी जननी
ललकि ललकि मन जावे हिम गिरि पर
मेरो प्राण तू ही महरानी मेरी जननी
अपर प्रदेश सुन्दर कहावें वेश
वसुधा बगन तू भवानी मेरी जननी
मधुप गुंजारे राम फूलन पै नाचि नाचि
झींगुर झनक सुख दानी मेरी जननी

ऊँचे परवत चढ़ि नाचे मोर कहूँ
झरना झरत बे ठेकानी मेरी जननी
सुनसान सघन अगम बन गिरिवर
आनन्द की उड़त निशानी मेरी जननी
गेहूँ धान जामे राम सरसों विपिन फूले
सुख झूले मड़ई पलानी मेरी जननी
गाबें मेंगराज मैना सामा तूती बोले नित
पपिहा बिरह से दिवानी मेरी जननी
बेली अलबेली गेंदा केतकी गुलाब फूल
कामिनी की अजब जवानी मेरी जननी
पीपल अनार बेल केला औ कदम्ब अम्ब
हसना बगन ठकुरानी मेरी जननी
अगर गगन बहे पवन सुगन्ध मन्द
हिय साले कोकिल की बानी मेरी जननी
ललकि ललकि मन जावे बन उपवन
मेरी प्राण तूही महरानी मेरी जननी
तेरो गोद बीच नाचे योगिनी यमुन गंग
सोनभद्र गावे मीठी बानी मेरी जननी
कृष्ण रावी ब्रह्मपुत्र मंगल सुनावें नित
सरयू की अजब कहानी मेरी जननी
तरल तरंग लहराय टोना जादू मारे
टोना वश मति बउरानी मेरी जननी
ललकि ललकि मन धावे नद नीर तीर
मेरो प्राण गंग महरानी मेरी जननी
जैति जै जै पुण्यधाम धर्म की अमल भूमि
जति जै श्री भारत भवानी मेरी जननी
आगरा प्रयाग बम्बे पटना ओ वारानसी
दिल्ली तेरी शुभ राजधानी मेरी जननी
तेरे पुत्र शूर वीर केशरी श्री कौशलेन्द्र
तेरी कन्या सीता महरानी मेरी जननी

जिनकी सुकीरती, सरलता, सुभाव, शील
मेरे बाप-दादा की कहानी मेरी जननी
तेरे उपदेशक थे व्यास, सनकादि मुनि
नारद, वशिष्ठ से विज्ञानी मेरी जननी
तेरे सुत धर्म्मचारी शंकर श्री रामानुज
रामानन्द गोरा प्रेमदानी मेरी जननी
कवि बाल्मीकि, कालिदास, जयदेव, विद्या
तुलसी की मधुरी कहानी मेरी जननी
तुलसी परम साधु कवि जाकी वाणी पर
मेरी जान निपट बिकानी मेरी जननी
तेरे पुत्र विजयी अडोल हनुमान जाकी
धोला गिरी अब लों निशानी मेरी जननी
विक्रम अशोक भीम बांकुरा प्रताप शिव
पृथ जाकि दिल्ली राजधानी मेरी जननी
ललकि ललकि जोह गावे तेरो शुभ यश
जैति जै श्री भारत भवानी मेरी जननी
तेरे पुत्र बंद भाखे नभ होके होके रथ
तेरी अब शक्ति क्यों थिरानी मेरी जननी
जागु जागु युग युग तू ही एक जीवित है
औरन पै आई है विरानी मेरी जननी
जग में सबल गाजें नैनन निहारी देखु
अबल को राखें शम्भु रानी मेरी जननी
अबल कहातो पर सबको सिखाती ज्ञान
जैति जै श्री भारत भवानी मेरी जननी
अबल समुझि हरि सबल के संग दिये
राज इंगलीसिया सुनामी मेरी जननी
शीघ्रहि सिरागी निशि उज्जवल दिनेश आवें
काहे तू व्यथित अलसानी मेरी जननी
दुःख में बचावें राम सारंग धनुषधारी
मंगल दिखावै सीता रानी मेरी जननी

सुख में या दुःख में धरम तू न छोड़ि मातु
पूरब की एक ही निशानी मेरी जननी
तेरे आगे मेरी माता उगि कै बिलाई ठाढ़े
कोटिन की जुलुमी जवानी मेरी जननी
आदि के तरून तेज वाले देश कहाँ आज
दुनियां में रही है कहानी मेरी जननी
वृद्ध तू भई है पर तेरे तन आभा लखि
नई आली भई है दिवानी मेरी जननी
तेरे भाग्यशाली नृप जौर्ज राजाजेश्वर
आये थे सहित महरानी मेरी जननी
परम कृपालु दोउ तेरे प्रेम मुग्ध होके
बैठे आकि दिल्ली रजधानी मेरी जननी
नृप प्रेम पाके अब जागु जागु माता मेरी
आगे तेरे नई जिन्दानी मेरी जननी।

ई दोनों गीत बाबूजी के कॉपी में लिखलों हमरा मिललों छेलै। यहीं सें पता लगैलों जावें सकै छै कि हुनकों मनों में आपनों देश लेली कत्तें सम्मान आरो श्रद्धा छेलै। आय हम्में सोचै छियै कि आजादी मिलला के बाद जे चीजों में बढ़ोत्तरी होना चाहियों, ऊ चीज बढ़े के जग्घा में अलोपित होय गेलों छै। देश के प्रति चिन्ता केकर्हौ नैं रही गेलों छै, जनता तें खैर मँहगाई के मार सें परेशान, यै लेली जों जनता देश-हित वास्तें अधिक नैं सोचें पारै छै, तें स्वभाविके छै। मतरकि जे राजनेता छै आरो जेकरों सुख-सुविधा के कोय अंत नैं छै आरो जे राजनेता सिनी राज्य चिंता छोड़ी कें भोग-विलास में डूबलों होलों छै, वहू सिनी आपनों देश लेली कहाँ सोचै छै, बस कहीं पर भाषण-भूषण दै देलकै आरो खिस्सा खतम।

जों हिनकों डायरी देखौं तें डायरी के पन्ना पर हेनों सब आदमी के नाम मिलथौं, जे राष्ट्रद्रोही छेकै, जे देश कें खतम करै लेली विदेश सें रूपैया लानै छै। तखिनकों बात आरो छेलै कि डायरी के पन्ना पर घोटाला के विवरण राजनेता नैं लिखै छेलै, जे कुछ लिखै छेलै, ऊ सब छेलै कि देश के आजादी लेली कौनें की करी रहलों छै।

हम्में सोचै छियै कि जों आय बाबू जिन्दा होतियै तें है सब वर्तमान राजनीतिक स्थिति देखी-सुनी कें कत्तें दुखित होतियै। मतरकि बाबू है सब नैं देखलकै, हुनकों ऊपर भगवान सहाय छेलै। स्वाधीन भारत में राजनीति सें लैकें समाजिक जीवन तांय की रङ भ्रष्टाचार फैली गेलों छै, एकरों एक जीवन्त चित्र कवि अमरेन्द्र नें बापू के नाम लिखलों गेलों एक हिन्दी कविता में यै तरह सें करनें छै, कि जेकरों उल्लेख करलों बिना नैं रहें पारी रहलों छी,

प्रिय बापू! अच्छा हुआ कि तुम चले गये
वरना तुम्हारी वह दुबली-पतली देह
तुम्हारे भारत में
(जिसे तुम सपनों का भारत नहीं बना सके)
सूख कर काँटा बन जाती
और जीने के लिये
तुम्हें वह सब करना भी अच्छा नहीं लगता
जो हम सबों को करना पड़ रहा है।
क्या करूँ बापू—मैं अकेले होता तो मर भी सकता था—
कोई समस्या न थी
लेकिन यहाँ तो सवाल अस्सी करोड़ जनता का है
जिन्हें मुट्ठी भर अनाज के लिए
किस-किस की न दलाली करनी पड़ती है
अपनी बहू-बेटियों को छोड़
बड़े लोगों की बहू-बेटियों की रखवाली करनी पड़ती है
तुम्हें यह सब करना अच्छा नहीं लगता
अच्छा हुआ कि तुम चले गये
आज तुम्हारा जन्म दिन है
जगह-जगह पर भीड़ जमी हुई हैं
सिर्फ तुम्हीं नहीं हो
(कि तुम स्वर्ग में हो)
लेकिन छोड़ो
इससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं

अब यहां सब कुछ ऐसे ही चलता है
तुम इसे मानो या न मानो
हर काम
दो नम्बर से निकलता है
मुझसे समय नहीं काटा जाता
लोग केक काट रहे हैं
एक बात जानते हो बापू
अब तुम्हारा सत्य
तुम्हारी अहिंसा
अदालत स्कूल की भाषा तक सीमित रह गह गई है–
जरूरी भी था
तुमने स्वर्ग में सुना ही होगा
सच बोलने वाले को
फिर इतना भी मौका नहीं मिलता
कि जान बचाने के लिये
वह फिर झूठ भी बोल सके
तुम्हारा सत्य और अहिंसा आदमी के हाथों में
जानते हो कैसा लगता है
जैसे कोई गिद्ध अपने पंजो में
दो छोटी चिड़ियों को दबाए उन्हें घूर रहा हो

तखनी तें बाबू जी के मनों में रामराज के सपना हेने छेलै,

राम-राज राजत सकल धरम निरत नर-नारी।
राग न रोष न दोष दुख सुलभ पदारथ चारि।।
राम राज संतोष सुख
घर बन सकल सुपास
तरू सुर तरू सुरधेनु महि
अभिमत भोग-विलास
खेती बनि विद्या बनिज
सेवा सिलिप सुकाज
तुलसी सुरतरू सरिस सब

सुफल राग के राज
दण्ड जतिन्ह कर भेद जहँ
नर्तक नृत्य समाज
जीतहु मनहि सुनिअ अस
रामचन्द्र के राज
कोपें सोच न पोचकर
करिअ निहोर न काज
तुलसी परमिति-प्रीति की
रीति राम के राज

एक हेनों रामराज्य जहाँ सर्वोत्तम शासन व्यवस्था, धर्म, नीति, अर्थनीति आरो राजनीति कायम रहें। जोंन राम-राज्य में सब्भे वर्ग के लोगों कें समान अधिकार प्राप्त रहतै। जाति, धर्म, लिंग के आधार पर कोय भेदभाव नैं होतै आरो जहाँ सब आपनों-आपनों कर्त्तव्य पर चलतें हुवें राष्ट्र लेली चिन्तित होतै। जहाँ मनुष्यों के की बात, पशु-पक्षियो मिली-जुली कें एक साथ रहतै,

रहहिं एक संग गज पंचानन
खग मृग सहज बयरू बिसराई
सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई

जहाँ तीनों प्रकार के कोय ताप नैं होतै,

देहिक दैविक भौतिक तापा
राम राज नहिं काहुहि व्यापा

जोंन राज में पाप आरो अपराध के स्थिति नैं होतै,

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ
नर्तक नृत्य समाज
जीतहु मनहि सुनिअ अस
रामचंद्र के राज

आरो जे राजा होतै, ऊ राम रं विनयी होतै। जे आपनों बात कें प्रजा के समक्ष रक्खै के पहलें ई कहतै,

जौं अनीति कछु भाष भाई
तौ मोहि बरजहु भय बिसराई

मतरकि बाबूजी के सोचलों सपना बेरथ चललों गेलै, जों देश के दोसरों-दोसरों लोगों के कारण देश के दुर्दशा होतियै तें कोय बात नैं छेलै, मतरकि आजादी के बाद जे देश के दुर्दशा होलै, आकि होय रहलों छै, ओकरा में सबसें बड़ों हाथ तें वही सब व्यक्ति आरो नेता के रहलै, जे बापू के साथ-साथ चली रहलों छेलै।

आजादी मिलथैं, सुख-सुविधा मिलथैं आरो गद्दी मिलथैं, हमरों देश के राजनीतिज्ञ सिनी के दिमागे उल्टी गेलै। यही बात कें बाबु लाल कदम नें 'आचरण' नामक एक छोटों कविता में हेना कें लिखलें छै,

बापू।
तुम्हारे सिखाये तीनों बंदर
जैसे के तैसे बैठें है आज तक
कोई अपनी मुद्रा से नहीं हिला!
क्योंकि उन्हें—
भला देखने, भला कहने
और भला सुनने का
अवसर ही नहीं मिला।

राम राज के सपना खाली हमरों बाबूजी के आँखी में नैं तैरै छेलै, मतरकि जे लोग भी हुनकों साथें बैठै छेलै, बस सबके आँखी में वहें रं के सपना आरो मनों में वहें रङ के बात उठतें रहै छेलै। कोय राजा भरत के आदर्श रखै छेलै, तें कोय नहुष के, आरो कोय तें सम्राट अशोक के उदाहरण राखै छेलै। मतरकि आजादी मिलला के साथे-साथे जेना-जेना दिन गुजरतें चललों गेलै, तेना-तेना बाबूजी के मनों में भी एक निराशा के भाव जागतें चललों गेलै।

हमरा याद छै कि जबें हम्में बहुत बच्चा छेलियै, तबें बाबूजी कागज के तिरंगा बनाय कें हमरों हाथों में थमाय दै छेलै आरो जबें हम्में ऊ तिरंगा लै कें ऐंगना में या दुआरी पर जाय कें जोरों-जोरों सें बोलियै कि 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा', तें ई सब देखी कें बाबू के आँखी में बहुत चमक आबी जाय छेलै, है चमक हेनों छेलै जेकरों आबें बखान मुश्किल छै।

देश लेली आबें लोगों के मनों में हौ भाव रहियै कहाँ गेलों छै,

आरो जबें भावे नैं छै तें आँखी में हौ चमक कहाँ सें होतै, जे बाबूजी के आँखी में हम्में तखनी देखै छेलियै।

जब हम्में हाथों में झण्डा लेलें हिन्नें-हुन्नें उछलियै, तबें हुनी हमरा आपनों कंधा पर उठाय लै आरो कहै–'देखों, आबें आपनों तिरंगा आकाश में लहरावें लागलों छै।' आरो तखनी हमरा सचमुचे में बुझावै छेलै कि हमरों झण्डा सच्चे में आकाश दिस उठलों चल्लों जाय रहलो छै।

वै समय में तिरंगा के प्रति बहुत सम्मान छेलै। जान चललों जाय तें चललों जाय, मतरकि झण्डा रों शान नै जाय। आय सोचै छियै–तबें सें लैकें आय तक में कत्तें समय बदली गेलै। तखनी सुनै छेलियै कि अंगरेज के गोली भारतीय के सीना में धँसलों जाय छेलै, तभियो झण्डा कें गिरे नैं दै छेलै। गिरतें-गिरतें दोसरा कें थमाय दै छेलै। आबें तें जेना तिरंगा रों हौ मान-मर्यादा ही खतम होय गेलों छै। लोगों कें आबें एकरों ज्ञान नैं रहलों छै कि तिरंगा केना कें फहरैलों जाय। तिरंगा उल्टा-पुल्टा फहरैलों जाय छै, ई तें एक बात होलै, सबसें बड़ों बात जेकरों दिस हम्में ईशारा करै लें चाहै छियै, ऊ ई कि आबें तें भारते के लोग झण्डा के अपमान करें लागलों छै, जेकरों उल्लेखो करना हमरा मुश्किल होय रहलों छै। के कहतै कि हमरासिनी यहाँ देश के वासी छेकियै आरो हम्में भारतवासी हुवौ केना पारौं, जबें कि देश के सम्मान रों प्रतीक ही हमरों सामना में जलैतें जाय रहै। आरो हम्में चुपचाप समाचार सुनी कें, पढ़ी कें घरों में दुबकलों रहौं, पता नैं तखनी हौ समय में आदमी के मनों में आपनों देश लेली हौ सम्मान कहाँ सें उमड़ी कें ऐलों छैलै कि हजारो-हजार, लाखों-लाख आपनों हाथ में तिरंगा लेलें एक्के गीत गैतें चली दै छेलै–'झण्डा ऊँचा रहे हमारा।'

कोय डर नैं, कोय भय नैं कि कखनी अंग्रेज सैनिक आवी जैतै आरो झण्डा लहराय वाला के माथा पर डण्डा बरसावें लागतै। नैं खाली बड़के-बूढ़ों पर, मतरकि बच्चा-बुतरू सब्भे पर। तबें वै समय में जत्तें बड़ों-बूढ़ों में आजादी पावै के हौसला छेलै, हुनका सिनी सें कम बच्चा-बुतरू में भी नैं छेलै। हमरा सब कुछ अभियो तक याद छै, कुच्छु साफ-साफ आरो कुच्छु धुंधला-धुंधला।

हमरा अभियो याद छै कि सब्भे के सामना में तें नै, सूना में

मैय्यो राष्ट्रगीत गुनगुनैतें रहें,

वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम्
मलयज शीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम्।।

शुभ्र ज्योत्सना-पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम्
सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदाम
वरदाम मातरम्।

सप्त-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
द्विसप्त-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले
अबला केन मा ऐत बॅले।
बहुबल धारिणीम्
नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीम् मातरम्।।

श्यामलाम्
सरलाम्
सृस्मिताम्
भुषिताम्
धरणीम्-भरणीम् मातरम्।।

हम्में एकरों दिश कै बार उल्लेख करी चुकलों छियै कि माय-बाबू हमरा हद से ज्यादा प्यार करै छेलै।

हमरे नैं हमरों संतानों के शादी-बियाह के बादो हमरों वैवाहिक जिनगी के अधिकांश साल माय-बाबू के छत्र-छाया में ही पलतें रहलै, जे बात कें लै कें घरों के एकाध लोग कुछ कुनमुनैलों रहै छेलै, यै में कोय

शक नैं। खास करी कें ननद-भौजाय के बैर तें जगत प्रसिद्ध छै।

मतरकि माय-बाबू रों प्यार ही हमरा पर एतनै छेलै कि केकरहौ मूँ खोली कें कुछ बोलना मुश्किले छेलै। हमरा याद छै कि बाबू हमरों लें ऊ सब करै लें तैयार रहै, जे एक बापें आपनों बेटा लेली करै छै, बेटी लेली नैं।

हमरों नौकरी लागी चुकलों छेलै, आरो बाबूजी के संकेतों पर हम्में कुछ-कुछ टाका काटी कें जम्हौ करना शुरू करी देलें छेलियै, बाबूजी चाहै छेलै कि जमा पैसा सें दस-ग्यारह बीघा जमीन कीनी कें हमरों नामों सें करी देलों जाय, जे जमीन हमरों भविष्य के सुख के आधार बनतै।

जबें जमीन खरीदै के समय ऐलै, तबें बाबूजी कें ई पता चललै कि ऊ जमा पैसा कें हमरों पति नें वै सम्बन्धी सें लै कें खरच करी देनें छै, जेकरा सें जुरमियाना करैलों जमीनों कें खरीदलों जाना छेलै। जबें बाबू कें सही स्थिति के ज्ञान होलै तें हुनका बहुत सदमा होलै आरो ई सोची कें कि हमरों भविष्य केना के सुखमय रहतै, हुनी घोर चिन्ता में रहें लागलों छेलै। खैर, जमीन तें जेना-तेना पैसा जोड़ी कें खरीदी लेलों गेलै, मतरकि यै घटना सें बाबूजी हमरों भावी दामपत्य जीवन कें लैकें बहुत दुखी रहें लागलों छैलै। सचमुचे में जमीनवाला ई घटना नें हुनका मानसिक तौर पर रूग्ण करी देलें छेलै।

हॉर्ट एटैक तें हुनका पहिलें होय चुकलों छेलै, आरो एकरों पीछू हमरे बाल-बच्चा के चिन्ता रहलों छेलै। बाबू के ई सपना छेलै कि हमरों नाती बहुत बड़ों डॉक्टर-इंजीनियर बनें। तखनी हमरों लड़का मनोज मैट्रिक पास करी चुकलों छेलै आरो नालन्दा मेडिकल कॉलेज में तखनी डोनेशन पर एडमीशन होय रहलों छेलै। बाबूजी नें हमरा बोलाय कें कहलकै कि देख बेटी, मनोज कें डॉक्टर बनाना छै। टाका के चिंता तोहें नै करियै। डोनेशन में जन्तें टाका लागतें, ऊ सब हम्में दै देवै। आरो बाबूजी नें सब कागज-पत्तर तैयार करवाय कें मनोज कें रवाना करी देलकै।

मतरकि हमरों बेटा के नसीब में डॉक्टर बनवों लिखले नै छेलै, यै में केकरों दोष कहलों जैतै—मनोज के, बाबू के आकि विधि के विधान के? हम्में कुछ नैं कहें पारौं। मनोज चुपचाप जबें घोंर लौटी ऐलै तें

बाबूजी नें कपार पीटी लेलकै। हुनका ई बातों के हेनों सदमा होलै कि हुनका पर हॉर्ट एटैक के पहिलों आक्रमण होय गेलै।

ई हॉर्ट एटैक सें बाबूजी के शरीर बहुत रूग्ण होय गेलों छेलै। एक तें हुनकों धीरें-धीरें बूढ़ों होतें शरीर, दोसरों हमरों संतान लेली चिंता, आरो तेसरों ई कि हुनी आपनों पुत्र सें जे आकांक्षा राखै छेलै, ऊ ठीक-ठीक नैं उतरें पारी रहलों छेलै। आरो तब तक बाबूजी के आर्थिक स्थिति भी तें खगी गेलों छेलै।

देश लेली आजादी के संघर्ष काफी तेज होय चुकलों छेलै आरो ई संघर्ष में सक्रिय भाग लेला के कारणें बाबूजी कें जेलो भेजी देलों गेलों छेलै।

कै साल जेल में रहला के बाद जबें बाबूजी जेल सें निकललों छेलै, तब तक हुनकों क्लाइंट बिखरी चुकलों छेलै। आर्थिक स्थिति जे गिरना शुरू होलै, तें सुधरना मुश्किल होय गेलै। मतरकि है सिनी बातों सें हुनी जत्तें प्रभावित नैं छेलै, ओकरा सें कहीं ज्यादा प्रभावित छेलै हमरों दाम्पत्य जीवन के बुनियाद कें लैकें, यहाँ रोग हुनका भीतरें-भीतर खैलें जाय रहलों छेलै। हुनी चाहै छेलै कि हमरों जीते-जी हमरों बेटी कें सब सुख-मौज के समान हासिल होय जाय। आय हम्में जोंन आलीशान मकान में रही रहलों छियै, वहू हमरों बाबूजी के देन छेकै। हमरों नामों सें हुनी है मकान किनी कें आपनों जीते जी देलें छेलै। सोचै छियै कि जों हमरों बाबूजी नें, हमरा लें, है सब नैं करी देनें होतियै तें आय हमरों जिनगी की रङ के होतियै।

बाबूजी कें तीन बार हॉर्ट एटैक पड़लों छेलै। तेसरों बार में तें हुनी नहिये बचें पारलों छेलै, हों जबें हुनका दोसरों बार दिल के दौरा पड़लों छेलै, तबें हुनकों प्राण शायद हमरे दीन-प्रार्थना पर भगवानें वापस करी देनें छेलै।

है बात आयकों लोगों कें विश्वास नैं होतै कैन्हेंकि लोगों कें ईश्वर पर विश्वास नैं रही गेलों छै। आबें लोगों लें देवता-पित्तर के बात सब ढोंग छेकै। बच्चा-बुतरू के कल्पना। जे चीज देखलों नैं जाबें सकें, ऊ हुवो केना पारें। यही सें आबें मंदिर-ठाकुरबाड़ी उजड़ी रहलों छै आरो यै जग्घा पर दुकान-होटल खुली रहलों छै। यै सब खोलला में टाका छै, पैसा छै।

आरो आदमी कें खाली टाका पैसा चाहियों। यै लेली लोगें भगवान के मूर्ति चोराय रहलों छै, ओकरा बेची रहलों छै आरो पैसा कमाय रहलों छै, आरो एकरों दलीलो दै रहलों छै कि जों भगवान होतियै तें हमरा दंड नै देतियै।

अजीब समय आबी गेलों छै। देवता-पित्तर रहें कि नैं रहें, मतरकि आदमी के है सब अधार्मिक विचार सें समाज की रङ बर्बर होलों जाय रहलों छै, ऊ तें यहा सें समझलों जावें सकै छै कि आय समाज में न माय सुरक्षित छै, न बहिन सुरक्षित छै, न बहू सुरक्षित छै, न बच्चा-बूढ़ों-जवान, कोय कहीं लुटलों जावें सकै छै, कोय कहीं मारलों जाय सकै छै। आरो चूंकि आदमी में धार्मिक विचार नै रहलै, धर्म के प्रति कोय डॉर नैं रहलै, यै लेली न्याय भी पैसा पर बिकें लागलै।

तखनी है रं के बात नैं के बराबर छेलै। हमरों मनों में ईश्वर के प्रति बहुत विश्वास छेलै। हमरा जेन्हैं एकरों खबर लागलै कि बाबूजी के हॉर्ट एटैक होलों छै, हम्में हुनको करीब आबी गेलों छेलियै।

हकीम-वैद सबनें नाड़ी छूबी-छूबी कें है घोषित करी देनें छेलै कि आबें हुनकों बचै के कोय उम्मीद नैं रही गेलों छै, आबें हुनकों सब आखरी साज-समान जुटैल्है में फायदा छै। ई सुनथैं हमरों रोआं-रोआं कानें लागलों छेलै।

हम्में बाबूजी के नगीच जाय कें बैठी गेलों छेलियै। हुनकों नाड़ी छूवी कें हुनकों ऐतें-जैतें प्राण कें टटोलै के कोशिश करनें छेलियै, मतरकि कुछुवो पता नै चललों छेलै। नाड़ी चलतें रहतियें तबें नी। हम्में दौड़ी कें महावीर मंदिर चली देनें छेलियै आरो महावीर जी के सिंदूर लानी कें बाबूजी के माथा पर तिलक नांखी लगाय देनें छेलियै आरो वहीं पर बैठी कें रात भरी भजन-जाप करतें रहलों छेलियै, सबकुछ सुध-बुध बिसराय कें। आरो शायद ई बात के केकरहौ विश्वास नैं होतै कि रात बीततें-नै-बीततें बाबूजी के देहों में प्राण लौटी ऐलों छेलै।

कल राती तांय जिनकों साँस ऊपर-ऊपर चलें लागलों छेलै, आबें ऊ संतुलित हुवें लागलों छेलै। कुछू देह में हिल-डोल भी हुवें लागलों छेलै। हमरों खुशी के तें कोय ठिकानों नैं रही गेलों छेलै, ईश्वर नें हमरों प्रार्थना सुनी लेनें छेलै।

माय नें जबें ई सब देखनें छेलै, तबें जेना लागलों छेलै कि बाबू के नैं, ओकरे प्राण लौटी ऐलों रहै। कत्तें दान-दक्षिणा करनें छेलै माय—निहाल होय कें। ई सब हम्में केन्हौ कें नैं भूलें पारै छी।

मतरकि बाबूजी कें जबें तेसरों बार दिल के दौरा पड़लों छेलै तें हुनकों बचना कठिन होय गेलों छेलै। एकरा सें पहिलें बाबूजी एत्हैं कमजोर पड़ी गेलों छेलै कि हुनकों उठना-बैठना भी मुश्किल होय गेलों छेलै। दिन-रात माय हुनकों नगीचे बैठली रहै। सेवा-सुश्रुषा में कोय कमी कसर नैं करै। की खाना छै? कि नैं खाना छै? माय सब चीजों के ताकीद रखै। तब तक तें मैय्यो काफी कमजोर पड़ी गेलों छेलै। बाबूजी कें उठाय-बैठाय में मैय्यो कें दिक्कत हुवै। जबें घरों के बेटा-पुतोहू पुकारल्हौ पर सहयोग नैं करै तें माय हमरा बुलवाय लै। पाव कोस भर के दूरी पर तें हमरों मकान छेलै। हम्में तुरत्ते नैहरा पहुँची जैइयै। दू-तीन दिन सेवा करियै आरो फिरू लौटी अइयै। आरो एक दिन पता चललै कि बाबूजी कें लोगें अस्पताल लै गेलों छै। तखनिये एक आदमी ऐलों छेलै हमरा ई कहै लें कि हमरा अस्पताल बोलवैलों गेलों छै।

वहाँ पहुँची कें देखनें छेलियै कि बाबूजी एकदम अचेत छेलै। हुनकों नाक-मूँ सें नली लगाय देलों गेलों छेलै। हम्में बाबूजी के सिरहाना में बैठी गेलियै आरो बिना कुछ जगह-कुजगह के ख्याल करलें भजन गाना शुरू करी देलियै। मतरकि ई बार भगवान नें हमरों प्रार्थना नै सुननें छेलै। हों, वहाँ पर दू-चार रोगी के सेवक जरूरे भजनों कें ध्यानमग्न होय के सुनतें रहलों छेलै। आरो ऊ रात जबें खतम हुवै पर छेलै, सूर्य के किरण शायद निकलै पर होतै कि तखनिये बाबूजी के प्राण किरण निकलै के पहिलें निकली गेलों छेलै। सबकें खामोश आरो कानतें-बेड़तें छोड़ी कें। हौ रात २ जनवरी १९७२ के रात छेलै।

मृत्यु सचमुच में कत्तें भयानक होय छै। जबें ई आवै छै, तबें खाली वही व्यक्ति कें नै लीलै छै, मतरकि आस-पास के स्वजन-परिजन कें भी आलोड़ित-विलोड़ित करी कें राखी दै छै। मृत्यु सचमुच में महाकाल छेकै, महाशांति दायक छेकै, तें महाविकराल भी। जबें ई चलै छै तबें आपनों सौ-सौ गोड़ों के साथ महाविनाश करतें दौड़ै छै। ई मृत्यु के वर्णन 'कामायनी' में जय शंकर प्रसाद नें एकदम ठीक-ठीक कहनें छै,

मौन! नाश! विध्वंस! अंधेरा!
शून्य बना जो प्रकट अभाव
वही सत्य है, अरी अमरते!
तुझको यहाँ कहाँ अब ठाँव
मृत्यु, अरी चिर निद्रे!
तेरा अंक हिमानी-सा शीतल,
तू अनंत में लहर बनाती
काल-जलधि की-सी हलचल
महानृत्य का विषम सम
अरी अखिल स्पंदनों की तू माप,
तेरी ही विभूति बनती है
सृष्टि सदा होकर अभिशाप
अंधकार के अट्टहास-सी
मुखरित सतत चिरंतन सत्य,
छिपी सृष्टि के कण-कण में तू
यह सुंदर रहस्य है नित्य
जीवन तेरा क्षुद्र अंश है
व्यक्त नील घन-माला में,
सौदामिनी-संधि-सा सुंदर
क्षण भर रहा उजाला में।

आरो बाबूजी के साथें हमरों नैहर के सुख-शांति, वैभव, यश, प्रतिष्ठा, सब कुछ आलोपित हुवें लागलों छेलै, जेना की महाप्रलय के बाद मनु के परिवार के सुख, समृद्धि, यश, वही प्रलय के साथ खत्म होय गेलों छेलै,

यह उन्मत्त विलास हुआ क्या!
स्वप्न रहा या छलना थी!
देवसृष्टि की सुख-विभावरी
ताराओं की कलना थी।
चलते ये सुरभित अंचल से
जीवन के मधुमय निश्वास,

कोलाहल में मुखरित होता
देव जाति का सुख-विश्वास।
सुख, केवल सुख का वह
संग्रह केन्द्रीभूत हुआ इतना
छायापथ में नव तुषार का
सघन मिलन होता जितना।
सब कुछ थे स्वायत्त, विश्व के
बल, वैभव, आनन्द अपार,
उद्वेलित लहरों-सा होता
उस समृद्धि का सुख-संचार।
कीर्ति, दीप्ति, शोभा थी नचती
अरूण किरण-सी चारो ओर
सप्तसिन्धु के तरल कणों में
द्रुम दल में आनन्द-विभोर।

बाबू के जबें देहावसान होलै, तखनी तक माय एकदम होशोहवास में छेलै। मन सें जरूर टूटी गेलों छेलै मतरकि देह सें नै।

बाबू के क्रिया-कर्म में माय नें कोनो कसर नैं राखनें छेलै। श्राद्ध के सब नियम जी खोली कें माय नें पूरा करवैनें छेलै। कंगला भोज करवैलों गेलों छेलै। पण्डित-ब्राह्मण-गरीब सब कें दान दिलवैलें छेलै माय नें। तखनी माय यही सब कें कहै—हुनी आपनों जीवन भर दान-दक्षिणा देतें रहलै, आय हुनकों इन्तकाल होला पर सब कामों में कोनो कमी, कसर नैं रही जाय, जे हुनका प्रिय छेलै आरो जेकरों नैं पूरा होला सें स्वर्ग में हुनकों आत्मा कें क्लेश पहुँचें।

माय के पास पैसा-कौड़ी के कमी नैं छेलै। जेवर-जेवरात तें छेबे करलै, बचलों-खुचलों सब धनो मैय्ये के पास छेलै। से माय नें खर्च करै में भी कोनो कोंर-कसर नैं राखलकै।

मतरकि जो-जों दिन बीततें चललों गेलै, माय पर दुक्खों के दिन भी कठोर बनलों चललों गेलै। बाबूजी के गुजरी गेला के बाद माय के जीवन में एक बहुत बड़ों सूनापन आबी गेलों छेलै। कभी-कभी हम्में आपनों घोंर सें नैहर पहुँची जैय्यै तें माय के दुख देखी कें हम्में विचलित

होय उठियै। 'गेना' महाकाव्य में गेनवां बाबू के मरला के बाद, गेना माय के करूण स्थिति हेना कें चित्रित करलों गेलों छै,

बाबू के मरथै मैय्यो रों हालत बड़ी विचित्र
घंटा-घंटा भर भीती पर लिखलों लागै चित्र
कभी कहै छै 'दौड़ैं बेटा, बाघ उतरलें छौ रे!
जो-जो रे बीजूवन बेटा, बाप गेलों छौ भोरें!
'तोहरों बाबू रे बेटा नेहों रों अजगुत खान
हमरों सुख नैं देखलों गेलै, दुष्ट भिलै भगवान
कुछ सें कुछ फदकै, बोलै छै, हालत बड़ी विचित्र
घंटा-घंटा भर भीती पर लिखलों लागै चित्र
ठाय-ठांय ठोकै चौखटी सें घुरी-घुरी माथों कें
नयकी छाती पर पटकै छै पीटनैं रं हाथों कें
दौड़ी कें गेना रों गल्ला सें लिपटै छै माय
दुख सें चीखै रहि-रहि कें जों रम्भावै गाय
गुदड़ी-गुदड़ी करी लेलों छै चेथरी-चेथरी साड़ी
चूल नोची कें धामिन लागै, आँख निरासै फाड़ी
सौ विधवा रं असकल्ली ही माय कानै छै, कुहरै
ई देखी-देखी गेना रों आँसू छलछल टघरै
कभी कहै छै 'प्राण जरै रे, बेटा सुलगौ देह!'
कटलों पाठा रङ तड़पै छै, करै दर्द सें 'एह!'
सुन्नों-सुन्नों लागै रे संसार वृथा श्मशान
'हमरे पाप विषैलै बेटा, बाघे खैलकौ बाबू
जहर खिलाय कें मारी दे रे, जीत्तों छियै आभू!
टोला भर रों जोंर-जनानी कस्सी पकड़ै माय
लेकिन कसलों मुट्ठी सें मछली रं छिलकी जाय
पाँच बरस तक हेनै बितलै, कब तांय आखिर जितयै?
चेथरी-चेथरी चुनरी के सूय्यां सें सुनलों सितयै?

है हम्मे नैं कहै छियै कि हमरों बाबूजी के निधन बाद हमरी माय के यहा हालत ठीक-ठीक बनी गेलों छैलै। मतरकि यहू सही छै कि माय जोर-जोर सें चीखै-चिल्लावै भले नै छेलै, दीवारी सें माथ भले नै ठोकै छेलै,

हाथों से छाती-कपार तें ठोकवे करते रहै छेलै, बाबूजी के गुणगाण करतें रहै छेलै, भीतर-भीतर रोतें-कलपतें मृतक नाँखी कभी-कभी निढाल पड़ी जाय छेलै। आकि टुकुर-टुकुर देखतें रही जाय छेलै। ई सब बात जबें हम्में याद करै छी तें हमरों मोंन होने दुक्खों सें भरी जाय छै। ई सब जानथौं हुवें कि,

कौनें अमरितों के धार पीवी ऐलों छै
ब्रह्मा रों किस्मत कें बान्ही कें लानलों छै
दू दिन ताम-झाम, फेरू फगदोले नी?
हंसा बिन जलतै शरीरों के खोले नी?
के फेरू हमरा लें? हमरों लें की रहतै?
सम्पत? सिंहासन? की इनराशन साथ जैतै?
पदवी? प्रतिष्ठा? की कंचन रं काया ई?
जात-पात, धरम-वरन, धरती के माया ई!
'मट्टी, अकासों, बतासों के, आगिन के
देहों रों भागे की निट्ठा अभागिन के?'
मांटी रों देहों के एत्तें की ताम-झाम?
एक दिन तें होनै छै अर्थी पर राम! राम!
लहकी कें सारा पर मिट्टी में मिलने छै
कत्तो मजबूत करों पाया ई हिलनें छै
हेकरै लें एत्तें ई सोना जुटावै छै!
एतौ, कड़कड़िया रौदी में टटावै छै!

तैयो लोगें ई शरीर, ई देह के मोहों सें मुक्त कहाँ हुवें पारै छै। जे कुछ आरो जेतना करें पारै छै, लोगें ई शरीर लें करै छै आरो जबें ई देह के नुकसान होय जाय छै, तबें परलोक वास्तें आदमी कें जतना हुवें पारै छै, आपनों पितर लेली श्राद्ध कर्म करै छै।

आय ढेरे लोग छै जे श्राद्ध पितर आरो परलोक कें फालतू के चीज मानै छै। ई आयकों बात छेकै, हेनों बात नै छेकै। भारत में तें शुरुवे सें हेनों विचार ऐतें रहलों छै जे परलोक, आत्मा आरो श्राद्ध आरनी चीजों कें फालतू के कर्मकाण्ड मानतें रहलों छै।

मतरकि खाली हिन्दुवे के एक बहुत बड़ों वर्ग नें, सौंसे दुनिया

के सब्मे धर्ममतावलम्बी यहा मानै छै कि स्वर्ग कहीं छै आरो ई धरती छोड़ला के बाद मनुष्य देह रहित होय कें वाहीं चललों जाय छै। आपनों कर्म-कुकर्म के फल भोगै लें। हिन्दू धर्म में तें परलोक आरो आत्मा पर काफी विश्वास छै। यही लेली आदमी आपनों पितर वास्तें श्राद्ध करै छै। श्राद्ध की छेकै? आपनों पितर वास्तें श्रद्धा ही तें छेकै। श्रद्धावश आपनों पितर लेली जे कुछ क्रिया-करम करलों जाय छै, ऊ सब श्राद्ध ही छेकै।

पितर लोक नरक लोक के नगीच जे यमलोक छै, वही पितरलोक कहलावै छै, हिन्दू में जे नरकलोक पर विश्वास करलों जाय छै, ओकरों संख्या भी कम नैं छै,

१. तामिस्त्र
२. अन्धतामिस्त्र
३. रौरव
४. महारौरव
५. कुम्भीपाक
६. कालसूत्र
७. असिपत्रवन
८. सूकरमुख
९. अन्धकूप
१०. कृमि भोजन
११. संदंश
१२. तप्तसूर्मि
१३. वज्रकण्टकशाल्मलि
१४. वैतरणी
१५. पूयोद
१६. प्राणरोध
१७. विशवन
१८. लालाभक्ष
१९. सारमेयादन
२०. अवीचि
२१. अयःपान

२२. क्षारकर्दम
२३. रक्षोगण-भोजन
२४. शूलप्रोत
२५. दन्दशूक
२६. अवतनिरोधन
२७. पर्यावर्त्तन
२८. सूचीमुख

आदमी यहा नरकलोक सें बचै वास्तें पितरलोक के आपनों पूर्वजों के प्रति श्रद्धा रखै छै।

आदमी जे श्राद्ध करै छै, वै में खाली आपने हित नैं, मतरकि परलोक में जे पितर होय छै, ओकरो लेली कल्याण के भाव होय छै। हमरों जे धर्मग्रन्थ छै, ओकरा सें पता चलै छै कि पितृलोक के साथ पितर के भी अलग-अलग वर्ग छै। ई पितर वर्ग उच्च, मध्य आरो निम्न वर्ग के कहलों जावें सकै छै। उच्च वर्ग के पितर स्वर्गलोक के अधिकारी होय छै। जबें श्राद्ध करलों जाय छै तबें वैंमें यहा बात के कामना करलों जाय छै कि जे उच्च वर्ग के पितर छै, ओकरा फेरू सें धरती पर नैं आवें लें लगै। आरो मध्यम तथा निम्न वर्ग के पितर लेली यहा कामना करलों जाय छै कि हिनका सिनी कें स्वर्ग के प्राप्ति हुवें।

ई सब बातों सें कहलों जावें सकै छै कि हिन्दू धर्म के श्राद्ध स्वर्ग तक पहुंचै के सीढ़ी छेकै। यही लेली हिन्दू सिनी बहुत नेम-ध्यान साथें चौदह-पन्द्रह रोज तक भी कष्ट सही कें श्राद्धकर्म में श्रद्धापूर्वक जुटलों रहै छै।

हमरों माय नें बाबूजी के श्राद्ध पूरा करवाय में कोय कोर-कसर नै छोड़लें छेलै, मतरकि ई सब पूरा होला के बाद माय एकदम टूटी गेलों छेलै। धीरे-धीरें माय पर कमजोरी के आक्रमण हुवें लागलै। पेटों के बीमारियो दिनोदिन उग्र हुवें लागलों छेलै, आरो सबसें बड़ों बात ई छेलै कि परिवार में माय एकदम वनवास नाँखी जीवन बिताय पर लाचार हुवें लागलों छेलै। घरों के लोग माय पर ध्यान शायदे दै छेलै। रात-बेरात दिशा-शौच लेली जैवों माय लेली कठिन हुवें लागलों छेलै। तबें घबड़ाय कें माय हमरा आपनों नगीच बोलाय लै। दू-चार दिन रही कें हम्मूं लौटी

अइयै।

माय के केकरूहौ भरोसों नै रही गेलों छेलै, से एकदिन कपड़ा लत्ता लेलें ऊ हमरों पास चललों ऐलै। कुछ दिन तक तें रहलै, मतरकि परिवारों में कहासुनी के खबर लगतें माय नें कहलें छेलै—'बेटी, हम्में आपनों घोंर चललों जाय छी। हमरे घरवाला कहें लागलों छै कि बेटी के यहाँ जिनगी काटी रहलों छी। जों कहीं प्राण यही बीचों में निकली गेलै तें अपयश के पहाड़ तोरूहौ पर गिरी पड़तौं। हमरों तबिअत तें खराबे रहै छै। दुर्गा पूजा नगीच छै। देखै छियै कि हमरों तबिअत दिनो दिन बिगड़ले चललों जाय रहलों छै। जो कहीं प्राण छुटी जाय छै, तें तोरा सिनी पूजा के कलशो नै बैठाबें पारवौ।'

ई कहला के बाद माय ठिक्के में आपनों घोंर चललों गेलों छेलै। आरो वहाँ ओकरों वही उपेक्षा आरो ओकरों वही अकेलापन चारो तरफ घिरी गेलों छेलै। सेवा के नाम पर एक दाय माय के देह-हाथ जांती जाय छेलै। मतरकि वहू हमेशे साथ नै रहै छेलै।

माय के एक आँख मोतियाबिन्द के ऑपरेशन में बही गेलों छेलै आरो दोसरों आँख सें सूझना भी कम शुरू होय गेलों छेलै। ओकरा पर पुतोहू के उपेक्षा, भरलों-पूरलों घरों में अकेलापन। माय बांकी जिनगी कें अकेलापन के भजन गावी-गावी दूर करना शुरू करी देलें छेलै,

अब हम भइलि बाहर जल मीना
पुरब जनम तप का मद कीन्हा
तहिया मैं अछलों मन बैरागी
तजलों मैं लोग कुटुम राम लागौ
तजलों कासी मति भै भोरी
प्राननाथ कहूं का गति मोरी
हमहीं कुसेवक तुमहीं अयाना
दुइ मंह दोस काहि भगवाना
हम चलि अइलीं तोहरे सरना
कतहु न देखहुँ हरिजी के चरना
हम चलि अइलों तोहरे पासा
दास कबीर भल कैल निरासा।

○○

कौनो ठगवा नगरिया लूटल हो
चन्दन काठ के बनल खटोलना
तापर दुलहिन सूतल हो
उठो री सखी मोरी माँग सँवारो
दुलहा मोसे रूसल हो
आये जमराज पलंग चढ़ि बैठे
नैनन आँसू टूटल हो
चारि जने मिलि खाट उठाइन
चहुँ दिसि धू-धू ऊठल हो
कहत कबीर सुनो भाई साधो
जग से नामा छूटल हो

जबें भी हम्में नैहरा पहुँचियै, माय कें यही दू गीत बारी-बारी सें गुनगुनैतें पैय्यै।

एक समय छेलै जबें माय शृंगार-पटार करी कें कत्तें चमकतें रही छेलै, आरो जीवन के आखरी समय में सब आभूषण उतरी गेला के कारण कत्तें सूनों-सूनों ओकरों देह बनी गेलों छेलै। सात-सात, आठ-आठ भरी के सोना के आभूषण माय के गल्ला-हाथों में झूलतें रहै छेलै। आखरी समय में सब उतरी गेलों छेलै। उतरी की गेलों छेलै, उतारी लेलों गेलों छेलै। माय हमरा आरो देखरेख करैवाली दासी सें यहा कहतें रहै–'देखैं नी, है आभूषण की हम्में साथ लै कें सरंग जैतियै? मरै तक तें हाथों में रहै लें देतियै।'

हमरा याद छै कि माय आपनों मकान के ऊपरवाली कोठरी में असकल्ले पड़ली रहै। बगलों में ओकरों एक संदूक भी छेलै, जेकरा में ओकरों कपड़ा-लत्ता भी छेलै। वही कपड़ासिनी में माय नें एक कीमती साड़ियो राखनें छेलै।

एक दिन जबें हम्में माय के नगीच बैठलों छेलियै, तबें माय नें कहलकै–'बेटी, हौ ठो कीमती साड़ी निकाली कें हमरा पिन्हाय दे। पता नै, साँस कखनी छुटी जाय। जिनगी भर साफ-सुफैय्यत में रहलां, आखरी वक्त में हेना कें मैला-कुचौला साड़ी में रहवो अच्छा नै लागे छै।'

माय के बात सुनलियै तें हम्में सन्दूक में ऊ साड़ी कें खोजना शुरू करी देलियै। बहुत उलट-पुलट करलियें, मतरकि ऊ साड़ी कन्हौं नै दिखाय रहलों छेलै। हम्में माय सें कहलियै—'ऊ साड़ी तें कन्हौ नै दिखाय पड़ै छौ।' तें माय नें कहलकै—'खुब्बे नीचें देखें।' हम्में उलटी-पुलटी कें आरो नीचें देखलियै। ठिक्के में ऊ साड़ी नीचें चपोतलों राखलों छेलै। हम्में ऊ साड़ी निकाली कें माय कें पिन्हाय देलें छेलियै।

माय के चेहरा सें एकबारगी ही हौ रुग्णता खतम होय गेलों छेलै, जे घड़ी भर पहिनें ओकरों चेहरा पर महीनों सें पड़लों छेलै। तखनी हमरा याद आवी गेलों छेलै चार-पाँच साल पहिलकों बातों के, जखनी माय हेने सब साड़ी में शृंगार-पटार करी कें निकलै छेलै, तें कत्तें शोभे लागै छेलै। जे जखनी देखै, ओकरो मुँहों सें ई निकलिये जाय—'जीवन माय रङ ई मुहल्ला में जनानी नै के बराबर छै।'

हम्में माय कें साड़ी पिन्हाय देनें छेलियै आरो माय ऊ साड़ी पिन्ही कें कुछ देर लेली मौन होय गेलों छेलै। कुछ नै बोललों छेलै। जेना लागी रहलों छेलै, ओकरों जिनगी के सब साध पूरा होय गेलों रहें।

माय के ठिक्के सब साध पूरा होय गेलों छेलै। घरों में बेटा-पुतोहू के व्यवहार सें ओकरों मन दुखित तें छेवे करलै आरो यही कारणें ओकरा केकरो पर विश्वास नै छेलै, बेटा-पुतोहुओ पर नै। आपनों जिनगिये में आपनों श्राद्धों के सब कार्य सम्पन्न कराय लेनें छेलै। सब पंडित-पुरोहित कें बोलाय कें गोदान के दान सें लै कें सब पूजा-पाठ तलक। यै लेली माय के चेहरा पर एक संतोष के भाव जे उभरी ऐलों छेलै, ऊ एकदम स्वाभाविक छेलै।

आरो एक दिन माय के प्राण छुटी गेलै, ओकरों माथों हमरों गोदी पर पड़लों रखलों होलों छेलै। ऊ १९७८ के ८ दिसम्बर छेलै, हम्में माय के मुँहों में तुलसी के जल देलें छेलियै आरो साथें-साथ गंगाजल भी। दू बून्द गल्ला के भीतर गेलों छेलै आरो बांकी बाहर निकली कें हमरों गोदी कें गीला करी देनें छेलै। माय के मरथै घरों में एक अजीब हलचल मची गेलों छेलै। लाश कोठरी सें बाहर निकलवैलों गेलों छेलै आरो बहुत हड़बड़ी में माय के संदूक के चाभी खोजलों गेलों छेलै। सन्दूक में ताला लगैलों गेलों छेलै आरो फेरू कोठरी कें साफ-सूफ करी देलों गेलों छेलै,

ई बात तय छेकै कि तखनी घरवाला में माय के मरै के जत्तें चिन्ता नै छेलै, ओकरा सें कहीं ज्यादा चिन्ता छेलै कि सन्दूक के समान हिन्नें-हुन्नें नै होय जाय। मतरकि माय कें आबें एकरों की चिन्ता छेलै, ऊ तें ई माया-जंजाल सें मुक्त होय गेलों छेलै, जे नै जरै छै, न मरै छै, न गलै छै,

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न च क्लेदयन्तापो न शोषयति मारुतः।।

माय-बाबू सें ही नैहर, नैहर बनै छै। आय हमरों लेली शायद नैहरा नाम के कोय चीज नै रहलों छै। बस जे कुछ छै, ऊ दिनों के स्मृति आरो स्मृति पर आँसू बहाय लें हमरों पास बचलों कुछ दिन,

''चिन्ता करता हूँ मैं जितनी
उस अतीत की, उस सुख की,
उतनी ही अनन्त में बनती
जाती रेखाएं दुख की।
आह सर्ग के अग्रदूत!
तुम असफल हुए, विलीन हुए,
भक्षक या रक्षक जो समझो,
केवल अपने मीन हुए!
अरी आँधियों! ओ बिजली की
दिवा-रात्रि तेरा नर्तन,
उसी वासना की उपासना,
वह तेरा प्रत्यावर्तन।
मणि दीपों के अन्धकारमय
अरे निराशापूर्ण भविष्य।
देव-दंभ के महामेघ में सब कुछ ही
बन गया हविष्य!
अरे अमरता के चमकीले पुतलों
तेरे वे जयनाद—
काँप रहे हैं आज प्रतिध्वनि
बन कर मानो दीन-विषाद।
प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित

हम सब थे भूले मद में
भोले थे, हाँ तिरते केवल
सब विलासिता के नद में।
वे सब डूबे, डूबा उनका विभव,
बन गया पारावार—
उमड़ रहा था देव-सुखों पर
दुख जलधि का नाद अपार।''